

या वस्तु-परिचय के लिये संक्षिप्त प्राकथन दे दिया गया है, जिनमें विद्यालयों के प्रथमादि के कमरों में ठहराना और सुविधा हो सके।

उन सम्बन्धित पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का भी उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है जिनमें कविताएँ या लेखाद्य लिए गए हैं, जिनमें विद्यालयों में स्वयं अध्ययन और पुस्तकालोकन करने की कवि उत्पन्न हो।

जो लेखक विशेष शैलियों के प्रयत्न, रिकाराक और प्रचारक हैं तथा जिनका हिंदी-संसार में समादर है और जो प्रतिष्ठित एवं शिथिल लेखक हैं, विशेष रूप से उनके ही मूद्र, मुद्राचक्र और वषट् श्लेषाः और काव्यांशों के संकलन करने की और विशेष ध्यान रक्खा गया है।

प्रत्येक पाठ के साथ पाठ-सहायक के रूप में शब्द-शब्दों, पदों एवं प्रयोगों (मुद्राचक्रों) पर विशेष ध्यान रक्खा गया है। विदेशीय शब्दों और पदों की सूचन व्याख्या भी शिथिलता में की गई है। विशेष शब्दों या शब्द-सुग्मों की बनावट आदि की ओर भी ध्यान रक्खा गया है।

प्रत्येक पाठ के अंत में जो अभ्यास दिए गए हैं, उनमें हमने विशेष ध्यान रक्खा है। इस संबंध में शिक्षा विभाग की विनियम में ही हुई बातों का पूरा ध्यान रक्खा गया है और नदनुबूल ही ध्यान रक्खा गया है। यदि शिक्षक इन अभ्यासों का आशय पर बालकों के अध्ययन करायेंगे तो हमें पूर्ण आशा है कि उनके विशेष योग्यता प्राप्त हो जायगी। भाषा के रूप, उनके शब्दों, व्याकरण आदि में पूरा परिचय हो जायगा, विचारों के प्रकट करने की शक्ति बढ़ेगी, वाक्य विन्यास का ज्ञान होगा और निरर्थकता की योग्यता बढ़ेगी। साहित्यालोकन में अनुभव रक्खा और न्याय-धर्म में कवि उत्पन्न होंगे। जिनमें भी न्याय व धर्म-संस्कृत, उद्योग और उद्योग प्रश्न होने चाहिए प्रायः व कनी इस पुस्तक में रक्खा।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१ मातृ-भूमि (पद्य)—मैपिलीटरर गुन ...	१
२ हरिद्वार और हृषीकेश की यात्रा—मैनेरवरदत्त शुक्ल, बी० ए० ...	६
३ सिंधिया के भोज और त्योहार—संकलित ...	१३
४ राजा भोज का सपना—राम दिव्यनगर ...	२१
५ कृतव्योत्तेजना (पद्य)—मैपिलीटरर गुन ...	२९
६ शेर का शिकार—संघन बी० ए० ...	३५
७ श्राव—प्रदानरूपर मिश्र ...	४६
८ शिक्षागो का रविवार—स्थानी कल्पदेव ...	५६
९ छाती-दमन (पद्य)—कृष्णप्रसाद उपाध्याय ...	६९
१० सर चन्द्रशेखर वेकट रमन—भृगुनाथ नागपूरवाडिंह	७२
११ हिनाल्प-दर्शन—कृष्णप्रसाद शैलवाड ...	८३
१२ जीवन-संमान और छोटे प्राणी—लक्ष्मणहर लाल, एन० ए०, एल० टी० ...	९६
१३ गंगावतरण (पद्य)—जगन्नाथदान 'संस्कार' बी० ए०	१०२
१४ वाटरले का युद्ध—राजनोहन गोडुल जी ...	११६
१५ सचची निव्रता—हरिनारायण मिश्र, एन० ए० ...	१२२
१६ वेतार का तार—संकलित ...	१३६
१७ तुलसी-रचना (पद्य) ...	१४५
(१) नवमई-सुमन—'तुलसी-रचना' में ...	१४५
(२) शिव-धरात—'०० तुलसी-रचना' ...	१४५
१८ मनापर मे शिकार—कृष्णप्रसाद ...	१५३

विषय	पृ
१९ लक्ष्य—कार्तिकप्रसाद ..	१६
२० जापान का शिक्षा-प्रणाली—चन्द्रमौलि शुक्ल	१७
२१ नीति-निबन्ध (पद्य) ..	१८
(१) रहीम-रचना—रहीम ...	१८
(२) गिरधर ईश्वर—गिरधरदास ..	१८
(३) कपीर-बाणी—कपीरदास ..	१८
२२ मिश्रता—समचन्द्र शुक्ल ...	१९
२३ मत्स्यहरिश्चन्द्र (नाटक)—भारतदु बाबू दक्षिणेंद्र .	२०
२४ राधाण और अंगद (पद्य)—केशवदास ..	२१
२५ घोष्य—उमाशंकर द्विवेदी ...	२२
२६ आत्मनिर्भरता—राधाकृष्ण भट्ट .	२३
२७ वर्तमान हिंदी-साहित्य के गुण-दोष—“मिश्रपु”...	२४
२८ सुर-सुधा (पद्य)—गुरदास ...	२५



विषय-विभाग

Prose (गद्य)

I. DESCRIPTIVE PIECES

(a) Natural Subjects—Trees, etc.—

वृक्ष, विनायक वृक्ष, लोखंड वृक्ष की रोटे वाली

(b) Man and His Activities, etc.—

मेरा बचपन, स्कूलों का जीवन, विद्या में मेरा जोर
लेखन

(c) Travels—संसार की दृष्टि की यात्रा

(d) Some Pieces on Abstract Subjects, etc.—

सत्य, ज्ञान की विद्या-यात्रा, वेदों का ज्ञान, सत्यता
में विश्वास

II. NARRATIVE PIECES

(a) Historical Stories, etc.—

बालरुद्र का युद्ध

(b) Biographical :—

एक चरित्र का वैभव रत्न

(c) Stories of Chivalry, etc.—

सर्वो विजय

(d) Imaginative Stories, etc.—

यज्ञ क्षेत्र का हत्या

III. LITERARY PIECES

(a) Short Instructive Articles—

निष्ठा

(b) Witty Pieces, etc.—बाल

(c) Essays—ग्राम निर्भरता

यत्नमात्र ही ही जा के लिये के गुण देवे, न-परिचित (न-पठ)

(d) Literary Criticism and Drama—

Poetry (पद्य)

1 Narrative—रावण और छन्द

2. Puranic Stories—काली दमन

3. Descriptive—गंगा नगर

4 Inspirational—कर्त्तव्योत्तमता

5. Love of Country—मातृ भूमि

6. Didactic—

नीति निबन्ध (शहीत रचना, सिरिधर जय, कबीर वाणी)

मुलता-मतगद्

7 Natural—शिव वरुण

8 Devotional—शुभ सुधा



साहित्य-प्रदीप

(१) मातृभूमि

(६)

नीलींश परिधान हारल फट पर सुन्दर है,

सूयं-धन्त्र युग मुकुट, मरुत क रत्नाकर है ।

नादियाँ प्रम-प्रसाद, वृल सारे भटन ह,

दरीजन स्वग-शृ द शप-जन' मिहामिन हैं ।

रुग आनयन पयाद ह बालिहारा इस वष वा;

ह मातृभूमि नृ मन्त्रा । मगुणमूर्ति भवरा की ॥

१ - ६ मन्त्राज जिन पर दुगल्लो ह कल्याणुस ह हृषी स्थि

२ - ६ मन्त्राज जिन पर दुगल्लो ह कल्याणुस ह हृषी स्थि

(२)

जिसकी रज में लोट लोट कर बढ़े हुए हैं,
 घुटनों के बल सरक सरक कर गढ़े हुए हैं ।
 परमईस-सम शास्त्र-काल में सब-सुख पाए,
 जिसके कारण "धूमभरे हीरे" कहलाए ।
 हम खेने-कूदे हर्षयुत जिसकी प्यारी गोद में,
 हे मातृभूमि ! तुझको निराल मग्न क्यों न हों मोद में ॥

(३)

हमें जीवनाधार भ्रम तू ही देती है,
 बदलें में कुछ नहीं किसी से तू लेती है ।
 श्रेष्ठ एक से एक विविध द्रव्यों के द्वारा,
 पोषण करती प्रेम-भाव से मदा हमारा ।
 हे मातृभूमि ! उपजे न जो तुझमें कृषि-शंकर कभी,
 तो तद्व्यवहार कर जन मरे जठरान्त में हम सभी ॥

(४)

पाकर तुझमें सभी सुखों को हमने भोगा,
 तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
 तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
 पस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है ।
 फिर अंत-समय तू ही इसे भयत देल अपनायगी,
 हे मातृभूमि ! यह अंत में तुझमें ही मिल जावगी ॥

(६)

सुरभि, सुंदर, सुन्द सुन्दन सुन्द पर मिलते हैं,
 भाँति भाँति के सरल सुधोचन कर मिलते हैं ।
 सोसधियों है ज्ञान एक से एक निरासी,
 खाने शोभित कहीं धातु वर रत्नोंवाली ।
 जे काबरपक होते हमें मिलते सनो पदार्थ हैं,
 हे मादभूति ! बहुधा, धरा वेंरे नाम क्यायें हैं ॥

(६)

शोक रहीं है कहीं दूर तक रौल-भेदों,
 कहीं फलवालि बना हुई है वेतें वेदों ।
 नदियों पैर फलर रहा है बन कर बेतें,
 पुरखों से तर-राति कर रहीं पूजा वेतें ।
 नष्ट नष्ट-बाहु नालों तुम्हें बंधन बाह बड़ा रहीं,
 हे मादभूति ! कितका न तु सात्त्विकभाव बड़ा रहीं ॥

(७)

बनानियों, तू दधानियों है, जेतनियों है,
 सुखानियों, बाललनियों, तू प्रेननियों है ।
 विनवालिनों, विरवालिनों, दुस हरदों है,
 भयतिवालिनों, शोभिकालिनों, सुखहर्षों है ।
 हे शरददाहिनों देवि ! तू करदों समका आय है,
 हे मादभूति ! संजान इन, तू जेतनी, तू जय है ॥

(८)

जिम पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,
 हमसे है भगवान ! कभी हम रहे न न्यारे ।
 लाट छोड़ कर वहीं हृदय को रात करोगे,
 हममें मिलते समय मृत्यु से नहीं होंगे ।
 उस मातृभूमि की धूल में जब पूरे सन जायेंगे,
 होकर भव-धवन-मुक्त हम आत्मरूप बन जायेंगे ॥

(स्वदेशसंगीत से)

—मैथिलीशरण गुप्त

पाठ-महायक

परिधान—वस्त्र, मेथना—काट-रूप, परमहंस—एक प्रकार के
 मन्वाकी, जठरानल—जठर-वेड + अन्न-अग्नि—उदर की आग
 जिससे भोजन पचना है—बेलो—अनल का तो अर्थ है अग्नि, नल
 का—एक राजा, पानी का नल, और आनल का अर्थ है वायु,
 प्रत्युपकार—प्रति—उपसर्ग + उपकार—उपकार के बदले उपकार—
 प्र.से उपसर्ग से अन्य शब्द बनाओ वया—अन्वैक, प्रतिस्पर्धा आदि,
 वसुधा—वसु—(अष्ट वसु) मरुति, धन + धा—धारण करने-
 वाली—इसी प्रकार ध लगाकर बनाओ अन्य शब्द जैसे अमुध,
 वात्सल्य—वास—लड़का—तत्सर्धी प्रम, अवर—आकाश, वस्त्र ।

अभ्यास

१—मातृभूमि के नाम हमारा क्या संबंध है, क्यों वह हमारी
 माना है ?

(२) हरिद्वार और हृषीकेश की यात्रा

आजकल सर्वत्र नीरम निदाय का प्रताप-जाप छाया है, सारा भूतल भगवान् भास्कर को ज्वाला सी मरीचिमात्रा से तप्त तवे के समान जल रहा है। प्रथम पवन तह-लठादि को भुलसा रहा है। घर से बाहर जाना दुस्साहस करना है। पथ छाँट में भी बैठे हाँक रहे हैं, पत्थो चंचु खोजे नीहों या तह-कोटरों में छिपे बैठे प्राय-रक्षा कर रहे हैं।

कितना ही पानी पोजिए, तथा शान्त हो नहीं होती। सारे शरीर में प्रस्वेद-प्रवाह है। ऐसे आतप-काल में कुछ आनन्द है ता शतल आवास में या शिमला, मंमूरी आदि पर्वतों के शान्त शतल प्रान्त के निवास में। श्रीमान् लोग यहाँ आतप से शान्ति प्राप्त करते हुए जल-वायु-परिवर्तन का भी लाभ उठाते हैं।

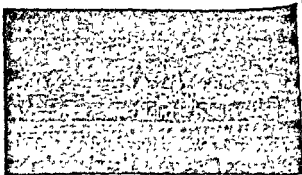
कुछ श्रीमान् "एक पन्थ हो काज" के सार को विचार कर मंमूरी और जेनीताल न जाकर हरिद्वार आते और लौकिक-पार लौकिक दोनों आनन्द प्राप्त करते हैं। जिन राजनेता ने एक बार भी इस परमानन्ददायक तीर्थराज में आने का सौभाग्य प्राप्त किया है वे, हम पूरा विश्वास है, यह कहने में कदापि सकंभ न करते कि यह स्थान अपने गुणो—

स्वास्थ्य-वर्द्धन और आशादकरत्व—में अपनी समझ नहीं रखता है। इस स्थान की मनोमोहिनी गति वर्णन के बाहर है।

हम १२ जून को लगनऊ से पंजाब मंज के द्वारा चले। मार्ग में एक ही विशेष घटना घटा, अवध-रहेलगाट रेल पर हरिद्वार के समीप लुकरा नामक एक स्टेशन है। हम मय देहरा-इलाहाबादवालों गाड़ी में निश्चित बैठ वास्तुलाप कर रहे थे कि एक घायु साहय अपने बाल-बच्चों के साथ उसी टिक्ये में आ विराजे। गाड़ी तेज होकर कुछ ही आगे गई होगी कि घायु साहय के छांट बच्चे ने बनका मनीयंग, जिमके अन्दर लगभग ७७०) के नाट और कुछ रुपये-पैसे थे, गाड़ी से बाहर गिरा दिया। घायु साहय अरे ! बंग ! कह कर उछल पड़े, गोद से बच्चा गिर गया। हमारे एक मित्र ने तुरंत गाड़ी खड़ा करने की जंजोर खींची, गाड़ी खड़ा हो गई। हम लोग उत्तर तो देखते क्या हैं कि एक आदर्मी, चलती हुई गाड़ी से कूद, वेग वठा वेग से भागा जा रहा है। हम लोग पोछे दौड़े और लगभग आधे मील पर उस पकड़ सकें। बंग मिल गया और मामला ज्यो-त्यो टंडा हुआ। गाड़ी फिर चल दी और हम लोग सकुशल प्रातःकाल ता० १३ को हरिद्वार जा पहुँचे।

गत वर्ष की अपेक्षा इस साल हरिद्वार में बहुत कम मंला हुआ। भयंकर दुर्भिक्ष और उससे उत्पन्न घोर दुःख हा इस न्यूनता के कारण हो सकते हैं। यहाँ पर अनेक देव-मंदिर

घोर धमशालाएँ हैं, इममें 16वाँ यात्री का रहने में दुःख होने की संभावना नहीं है। हम पादत्य दरम घोर गंग सँ का वरुन आगे करगे। यही मायादेवा - हा महागनी, बि केयर महादेव, सूर्यकुंड और कनखल में वरु प्रजापति मंदिर दर्शनीय है।



हरिद्वार की गंगा

आप. ही वरु दूर हरिद्वार श्री भवानापुर मठान के मध्य में अग्निपुत्र मठकयाथन की स्थापना हो गई थी। दरम की कृप से वरु अरु नरु जोरन । हम इमका गंगापु के लिए भगवत म म प्रथम रहने । मण्डुमान से नरुन । यार मनामःनरुय के हा मी म अरु वरु का अरुह मरुया हवका श्रुकी है। मरुने वैदुनरुय व वरुका का मरुत हका म । मरु मरुनरुय नरुग मरुतमरुने में मी मरुन व मरुका हका । वरु अरु मरु मरु

प्रकार से पोषण है। हमें आशा है कि इत्येक हिंदू कुट्ट न कुट्ट देकर इन पवित्र अधिकृत को सहानुता करेगा। इस आश्रम के अधिकारियों से हमारा निवेदन है कि वे धर्मनिरपेक्ष को हटाकर इसका प्रबंध एक सुशिक्षित तथा सुयोग्य सभा को दें और यों इसे चिरस्थायी तथा उपयोगी बना दें।

१५ जून को प्रातःकाल हमारी इपोकेश के लिये तैयारी हुई। बैलगाड़ों के लिये वहाँ तक और कोई भी सवारी नहीं जाती। मार्ग में दो-दो स्थानों में पहाड़ पर चढ़ना-उतरना पड़ता है। यहाँ के लोग कोसी का 'मोल' कहते हैं। पटले सुनते थे कि हरिद्वार से इपोकेश १० 'मोल' है। हमने सोचा था कि अपने हिमाचल में केवल ५ ही कोस चलना होगा, परंतु उनके स्थान में हमें १० कोस का मार्ग नापना पड़ा। रास्ते के पथरीले होने के कारण बैलगाड़ा को बहुत झिझना और 'लड़-गड़ाना' पड़ता है। इपोकेश-यात्रा में गाड़ों के अक्षैलित होने के कारण धोरूप से उदर-अंधन हो जाता है।

लौटते समय एक अति शृंगार मंड जो का माय हुआ। जिस समय पथरी के ऊपर चढ़कर गाड़ा रात से मोषे गिरती थी, शेरारे मंड जो अंधन-में हा जाते थे, रास्ते में बाधाें दूर पर मंगलमंगल के का मंडे पड़ना है। इपोकेश में भरत के केंद्रों और मंगलमंगल के मंगलमंगल मुख्य हैं। एकी पर बाधा का को अंधनमंगल का मंगलमंगल के मंडे का बाधा मंडे लिये है। एकी केंद्रों के मंडे लिये है।

पर दौबत में भरो हुई कोमलंगो परंतु प्रवत और नुंदरो,
परंतु विगल नूर्तिमती गंगा देव पड़तो है ।

अपनी रमदायता और मरमता में तद-वानियों को निरंतर
मोहित करना इनका मंत्र है । इनके ऊपर दशोकेश और
कुचनदभूजा में आप गंगा-वाजिका को भूषणे हुए-ना पाइएगा ।
यहाँ यह हठोला लड़की के महग कही हैंसतो, कही खेहती,
कही चिह्वाती और कही पर गाली हुई दृष्टिगावर होती है ।
उन स्थान पर इस विगल तंजन्विनी वाजिका का रूप अद्भुत
हो है । वहाँ पर इन अपने निच पर्वत और वन की गोद में
नया अपने पथरीले भूले पर गिनचिना कर दौड़ते हुए देखकर
देखनेवाले के चित्त में असांभ आनंद होता है ।

कुचनदभूजा के ननीप वन और पार्वतर दरय तो गंगा जी
की और स्वयं भागोरणी भी उनकी शाभा जाता है । यहाँ
पर गंगा का अदृषित रूप, अगतिहत तंज और बढ़ती हुई
दौबनावत्या का इस दिग्गर्भ देता है । जिन्हें गंगा जी की
स्वाभाविक मधुरता, गानता और नृस्वादुता का आनंद चरना
हो उन्हें इस स्थान अवश्य देखने चाहिये । उनमें संदेह
नहीं कि यहाँ वे भागोरणी के अनुनम नौदर्य, अलौकिक
प्रकाश, अनुलनीय लावण्य, अग्रतिन रूप, अपरिमेय तंज और
अकथनीय प्रभाव से अवश्य मोहित होकर यहाँ के आनंद
और सुख को सदा स्मरण रक्खेंगे

पाठ-सहायक-

आश्चर्यादित—ठके हुए, निर्दिष्ट—निश्चित, मनोमालिन्य—
(मनस + मालिन्य) मन की मलिनता, चरमथायी—दीर्घ काल तक
रहनेवाली, आन्दोलित—दिलता हुआ काटिया—बड़े बड़े क्षम्ये,
अत्रनिहत—अटक, रत्नान्नीय प्रशमनीय ।

अभ्यास

- १—इस यात्रा का परिचरित करके पत्र ले लिखो ।
- २—गद्दा भी का कदा कैमा रूप चिन्त लक्ष्या है ?
- ३—भावात् लभ्यकर वाक्या में प्रयोग करा— माग जानना, हवा
होना, प्रथम हवा की भगना, प. उठा होना, पैर में काम
लेना, उड़ मीम लेना ।
- ४—किस विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं, इन्हे भिन्न भिन्न अर्थों में
प्रयुक्त करा —

डाला करना बाल, टटो, महारत्ना, द्य ।

- ५—किस प्रकार के उच्य है और कैसे बने है—उत्ते ही और शब्द
बना का प्रयुक्त करा—पथरीले पथ, पार्थिव इडोली
कोपनीय ।
- ६—इस पद्य में जोड़ेवाले उच्य चुना और उच्यी व समन अच्य
उच्य बनाओ तथा प्रयुक्त करा ।
- ७—प्रथम अनुच्छेद का अर्थ चुना और उनका पद-व्याख्या कर
उनकी में सिद्ध रूप का अर्थवाक्य क रण में परिवर्तित करा ।
- ८—^१पाठ समान लभ्य—
सुन्दरताय प्रजेसोदन अनेकमेव, सुभरीपाद, पिरपादी ।
- ९—नेत्रेण चक्षुः कदा है, कदा है अथ कदा प्रसिद्ध है ।

संकेत—
इं हुए जाने का माग विमान का लडा ही पाठ का सिद्ध
होना बहना

(३) तिथियाँ के भाज और त्योहार

भारतवर्ष में बौद्धों के नामे मिन्य, राजपूत और मरहटा जाति के नाम अति प्रसिद्ध हैं। इन तीनों और विरांपरूप में मरहटों ने सुनतमानों में अनेक बार गमावकारों युद्ध किए और अंत में उनकी म्यारिन राज-शा की समुत्पन्न नष्ट हो कर दिया। तदनंतर मिन्यों और मरहटों को अंगरेजों ने भा घुट करने के अर्थनम प्राप्त हुए और जिम कीरता का परिवश उन्हेंने दिया उसकी भूरि भूरि प्रशंसा और निराल सुद-आहक विशेषियों में की है। अतः अन्हां मरहटों के सामाजिक जीवन, भाज, त्योहार एवं गिहा-कारादि का माध्याम विवरण किया जाता है।

दो-तीनों निम्नलिखित भारतवर्ष के इतिहास में एक प्रसिद्ध व्यक्ति को चुके हैं, अतः उनके विषय में, प्रस्तुत प्रमाण में, विशेष लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने अंगरेजों से युद्ध किए और परन्तु मरिद हो जाने पर एक अंगरेजों रेजाेंट उनके माथ रहने लगा, जिमके माथ की अंगरेजों अंतो का अर्थन ई० स० १८०६ से अंतो १८१० तक था। इमने तिथियाँ महाराज के साथ रहते हुए अंतो भाई की, जो अंगरेज में था, ३२ पत्र लिखे थे। पहला पत्र २६ दिसंबर सन् १८०८ को और अंतो २७ फरवरी सन् १८०६ को लिखा था। इनके पत्रों से मरहटों के अन्य व्यवसाय-विश-

तरफ से रेज़ाईंट के यहा रहते थे, बैठे। चलने लगने इतर और जान दिए गए और गापानराव, जो पहले रेज़ाईंट माहय के स्वागत के लिये द्वार पर ख्याए थे, उन्हें बहा वपन पहुँचाकर लोट आए।

जब महाराज किसी से निन्दने जाया करते तो अपनी मन-मद (गदा) वही पहले हा से भेज दिया करते थे और वही पर प्रायः सय बातें बनीं ही जातीं जैसे अदनं दरार ने हुषा करती थीं। हाँ, पान व इतर देने का काम उन निःश्रम का होता था। बिनाप अवनरी पर रिज़लत दा जाती था। एक बार रेज़ाईंट माहय को महाराज को और से एक प्राति-भोज दिया गया। मागंकाच का समय था, डेरों में रेवां-निहासा व पस्तलों आदि का अन्ना ठाट-घाट लगाया गया था। महाराज की तरफ से एक पैली, जिनमें एक हजार रूपए थे, भेंट की गई और रेज़ाईंट माहय ने उन सरदार को, जो पैली लाया था, दिलभत दा। फिर रेज़ाईंट ने गवर्नर-जनरल को और से चार सुंदर शरबां घोड़ों के सहित एक सुंदर बग्घा, जिनमें सोने का काम हो रहा था, महाराज को भेंट की।

महाराज को और से सय त्याहार यथाविधि मनाए जाते थे। मंत्राति के अवसर पर महाराज ने मुख्य मुख्य सरदारों तथा रेज़ाईंट को विल भेंट किए। इसी अवसर पर हादनों के एक धनाध्य वैश्य ने बहुत-से आइयाँ को भोजन का निमंत्रण दिया और गान-पान का प्रशंसनीय खर्च किया। जिनाने के परवान् पत्येक को एक घोड़ी, कपल और रुई की सदरी भेंट

की। तदनुसर वसंतमहोत्सव पर परास्पर पूज्य हो कर, बसेली रंग की पगड़ियों में लुगाए गए। छावनी स्थान पर भाच-गान पूजा।

सुमरमानों के मोहरम के अवसर पर महाराज ने दरबार के समय हर बच्चे पर हमें और वे छावनी के बच्चे, जिनकी संख्या जो भी अधिक था, देने लगे। जाने के पूर्व रात्रि का सब नाति। तुरन्त के साथ ही न्यू के सामने जाय गए और महाराज ने जो थिये हाथर ही तथा पट्टेवाजी सादे की देखा, मादन माइव हिंदुमानो कीमाक। इन का रजापट के सुमरमान बलाप हुए नातिप के साथ साथ देखा पर बहुरर के साथ का। यह सन्मान १० गर्वन का प्रतीक था।

होली के अवसर पर अत्यन्त सब सुखाने रजापट सिंधिया महाराज के दरबार का था। महाराज ने बड़ी सुखाबलाप में इन पर तुरन्त के साथ हाथर। इन अवसर महाराज कुछ उबार हीं तुरन्त के साथ हाथर महाराज के बुलकवा का जिनके के होने पर ही अत ईकने के हि सुमुना बली-देहा तुरन्त बलि-नहा मगा था। हींहा ही ईद में बहा का। सुना सुखाका-नाली मग के हींहा में भाव ही। हाथर पर अति कनी के सुना के अति-नहा बहाई का हाथर का। हाथ हाथ का हींहा मगा। अत हाथे सुख ही।

ये कि गानगात एक ही पल्लव से बांध-बांध सौ रूपों एकत्र कर ले जाते थे।

जन्माष्टमी के महात्म्य के लिये विशेषरूप से एक विस्तीर्ण तंहु लाना गया और पूल-हाल मध्य खास बनार गए। इस काम के लिये कामरूपक बहुत जायनों के बखान से मोल ली जाती और उत्तम का समाधि पर फिर वैश्या को देय दी जाती थी। इस अवसर पर श्राद्धों का एक बहुत रूपका दान दिया गया। तत्पश्चात् का नद्युत से काए हुए प्रवीर शालधर्मियों का इलभारा न बनाकर रक्त हुआ। नद्युत ने उस समय के लोग बहुत धर कर वहाँ से दूर दूर क्षमन-धूरिनाय जाया करते थे।

दशहर के त्योहार पर एक दिन एव ही घोड़ों को लान, मालिश खाद के द्वारा वेजा और जल-शर्मा का साक किया गया। प्रतःकाल स्वापद हुए। महापाम जहाँ टैन बजे पधारें। उनके पहले हारपदा पर मंडी निकाल गए। स्वकार और अन्तर खाद सुपुत्र के साथ थे। पौष्टिक न एक वृत्त की दर्शनो ही— का एक स्थल पर लगाइ गई थी—दूध, चावल खाद से पूजा की।

तदन्तर नारायण न उत्तम से एक भाग करणों तलवार से लोड़ और वाइते ही कर नीलरुठ छोड़ दिए गए जिन्हें गड्डे हुए इक साल का बचना तथा बंदूकों का चलना करम्भ हुआ और सब लोग एक रोड ही और दोड़े और वहाँ से बाँके ले आए। मजानी के अरपानु नारायण सबे हुए हाथी पर खवार ही अपने निवास-स्थान की पधारें। नग ने स्थान स्थान

रचना, कोई नदी या ताताव नहाने से न छोड़ा
बादमी नदी है जिमकी निगाह में मैं पवित्र पुण्यात्मा न

सम्भ बोला, डीक, पर भोज ! यह ता बनता कि तु
की निगाह में क्या है । हवा में बिना धूप
दिव्यलाई बने हैं ? पर मृत्यु की किरण पड़ने ही कैसे
बसकने लग जात है । क्या कपड़े के छाने हुए मैले
बिबी का कीड़े मायूम पड़ने हैं पर जब मूर्खीन
अगाधर दशा ना एक एक रूंद में हठारी जीव
हैं । कम का मू कम बात का जानने से, जिसे अक्षर
बादिल, दगता नहीं ना था, मंग माध था, मैं नेही चाँसे

निदान सम्भ यह कहक राजा को मंदिर से कम बड़े
दरकार पर बड़ा ब गया कि जहाँ से मारा
दशा का बीज फिर वह उमरों वा कहने लगा कि भोज
अभी ना पाए-अर्था की कुछ ही बचो नहीं करता
अपने नई जिम निगाह समझ समझ है । पर वह
कि नुर पुण्य-बसे बीन-बीनसे फिर हैं जिनसे
अपनाअपन सेगुह होगा ।

राजा यह सुनकर अनात्म समझ गया, यह तो
मम की बात थी । पुण्य बसे के नाम से आने फिर का
ना-निगाह फिर, उसे जिमके का कि बात ना मैं

चाहे न किया हा पर पुण्य मैंने इतना किया है कि भारी से भारी पाप भी उसके पासंग में न ठहरेंगा ।

राजा को वहाँ ठम समय नपन में तीन पंहु बड़े ऊँचे ऊँचे अपनी आँखों के मानने दिव्याई दिए । फला में लदे हुए कि भारी वैभक्त के उनको टहनिया भग्नो तक भुक्त गई थी । राजा उन्हें देखने ही डरा हो गया और बोला कि अत्य ! यह ईश्वर की भक्ति और जीवों को दया कराने ईश्वर और मनुष्य दोनों की प्राप्ति के पंहु हैं, देखो फलों के वैभक्त से धरती पर नए जाते हैं । ये तीनों मेरे ही लगाए हैं ।

पहले मैं ता वे नव लाल लाल फल मेरे दान में लगे हैं और दूसरे मैं वे पोल्ले पोल्ले मेरे न्याय में और तीसरे मैं ये नव फल मेरे तप का प्रभाव दिखाते हैं । मानों उस समय चारों ओर से यह ध्वनि राजा के कान में बली आती थी कि धन्य हो महाराज ' धन्य हो आज तुम-ना पुण्यात्मा दुमरा कोई नहीं, साक्षात् धर्म के अवतार हो, इन लोक में भी तुमने बड़ा पद पाया है ही । उस लोक में भी तुम्हें इतने अधिक मिलेगा । तुम मनुष्य और ईश्वर दोनों का आनंद में निरुप-निष्पाप हो, मृत्यु के संदह में सात कणक समयावधि पर तुम पर एक झंटा भी नहीं लगाते

अत्य बोला कि भोज ! मैं इन पंहु के लाल में ही मैंने ईश्वर की भक्ति और जीवों को दया क इतना किया है कि भारी से भारी पाप भी उसके पासंग में न ठहरेंगा, तुमने फल-फूल कुछ भी नहीं दया ।

पानों और मफेद फल कहीं से आ गए। ये मध-मुष इन पेड़ों में फल लगे हैं, या तुम्हें फुमकाने और खुरा करने को किमी न बनकी दृष्टियों से लटका दिए हैं। चन् इन पेड़ों के पान चल कर बेगरे तो मही।

मेरी समझ में तो ये नाल लाल फल, जिन्हें तू अपने दान के प्रभाव से लगे चलता है, यश और कीर्ति फैलानेको बाद अर्थात् प्रशंसा पाने की इच्छा ने इस पेड़ में लगाए हैं। निदान उयी ही मरय ने उम पेड़ के छूने को हाथ बढ़ाया, राजा सपने में क्या देखता है कि वे मारे फल जैसे आनमान से सारे गिरते हैं एक धान की धान में भरती पर गिर पड़े। धरती मारी नाल हागई। पेड़ों पर सिवाय पनां के और कुछ न रहा।

मरय ने कहा, राजा! जैसे कोई किसी यात्रु को मोम से विपकाता है उमी तरह तुने अपने भुलाने की प्रशंसा पाने की इच्छा से ये फल इस पेड़ पर लगा लिए थे।

मरय के लेख से यह मोम गल गया, पेड़ डूँठ का डूँठ रह गया, जो कुछ तुने दिया और किया सब दुनिया के दिखलाने और मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिये, कवल ईश्वर की भक्ति और जावा की दया से तो कुछ भी नहा दिया। यदि कुछ दिया हा या किया ना तो उयी नला बनजाता। मूर्ख! इसी क भरास पर तू केना आनन्द पाने का नेवार हुआ था।

भोजन एक ठहा मीम ना उमन ना और का भूला समझ था पर उह मरय आनन्द भूला आनन्द ना, मरय ने उम पेड़

की तरह हाथ बढ़ाया तो शिवने की तरह बसकने लगे पीले प को
 से लहा हुआ था। शिव का हाथ धाम पक्षि की इच्छा भी
 यही हाथ ही गया तो पहले का हुआ था। शिव बोला कि
 भाग्य ! पहले का पक्षी मुझे कायम, शरीर को स्वार्थ मित्र करने
 की इच्छा से गया जिद से। प्रहमेदामें ने हीक कहा है कि
 मनुष्य मनुष्य के कर्मों से इनका शरीर का भावना का विचार
 करता है और शिव मनुष्य के मन की भावना से अतुल्य
 हमके कर्मों का हिस्सा लेता है।

शु शिवजी तरह जानता है कि यही शपथ ने राज्य की
 ग्रह है, जो शपथ न करे तो फिर यह राज्य ने हाथ से बंदों
 कर रह गये। शिव राज्य में शपथ नहीं वह तो शैतान का
 घर है मुद्रिया के शीत की तरह हिन्सा है, अब गिरा अब
 गिरा। मूर्खों ही क्यों नहीं बतवाता कि यह नेरा शपथ
 स्वार्थ मित्र करने और सामाजिक सुख पाने की इच्छा से है
 अतः शिव की भक्ति और जीवों को दया से।

भाग्य की पेशानी पर पसीता हो आया, झटके नीचो कर
 ली, जबाब कुछ न बन पड़ा। तीसरे पक्ष की पारी आई। मृत्यु
 का हाथ लगते ही बसकी भी बड़ी जानत हुई। राजा अत्यंत
 नज्जिन हुआ। मृत्यु ने कहा कि मूर्ख ! यह नेरे तप के फल
 कदापि नही, इनको तो इन पक्ष पर नेरे अहंकार से लगा रहना
 था। यह कीत-सा मन था नार्थ-दावा है जो नृने निरर्थकार कर्म
 शिव का भक्ति ही शिव का दया से है। नृने निरर्थकार कर्म

इसी घान्ते किया कि जिममें अपने तरुं भोरों मे अगुआ और बढकं विचारं । ऐसे ही तप पर गाथरगनेर ! तू स्वर्ग मिनने की उम्मेद रखता है पर यह ता यतना कि मंदिर की उन मुँडेरों पर वे जानवर-में क्या दिखनाई देते हैं । कैसे सुंदर और प्यारे मानूम होते हैं, पर ता उनके पशे के हैं और गर्दन फोरोंके की, दुम में मारे किस्म के जवाहिर जड दिए हैं ।

राजा के जी में घमंड की चिडिया ने फिर फुरफुरी ली, मानों मुझते हुए दिये की तरह जगमगा उठा । जल्दी से जवाब दिया कि मस्य यह जो कुछ तू मंदिर की मुँडेरों पर देखता है मेरे संध्या-बंदन का प्रभाव है । मैंने जो रातों जाग जाग कर और माथा रगड़ते रगड़ने इस मन्दिर की देहली को घिसा कर ईश्वर को स्तुति-बंदना और विनती-प्रार्थना को है यही सब चिडियों की तरह पंख फैला कर आकाश को जाती है, मानों ईश्वर के सामने पहुँच कर अब मुझे स्वर्ग का राजा बनाती हैं ।

मस्य ने कहा कि राजा । दीनबंद करुणासागर श्रीजगन्नाथ जगदीश्वर अपने भक्तों की विनती सदा सुनता रहता है और जं मनुष्य शुद्ध हृदय और निष्कपट हाकर नम्रता और अडा माध अपने दुःखमोर्षी का पञ्चानाम अथवा उनके समा हो का टुक भा निवृत्त करना न बल उनके निवृत्त उमा दम सुं शक्ति का बंध कर पार हा जाता है । फिर क्या कारण कि य मय अब तक मंदिर का नेटव ही पर रंग रह । आ जल द ता गला हम जोगा के नाम जाने पर आकाश की उड गती

या उसी तरह पर परकट कृत्यों की तरह फट्टकटाया करते हैं।

भाज डरा लेकिन नृत्य का नाम न लेता। जब सूँड पर पहुँचा तो क्या देखता है कि वं नार जानवर, जो वर में ऐसे दिखनाई देने से, जगें हुए पहेँ हैं, पर मुझे-मुझे और प. तें दिख-कृप नहीं हुए, यही तक कि मारे पदु क राजा का निर भिना रहा दो एकने, जिनने कुछ दम शका था, । उड़ने का शब्द भी किया तो उनका पंग पारे की तरह भारी तो गया और उन्हें उल्टी टों देबा रकरा। तदका उरर किए पर उड़ने डरा भी न दिया।

नृत्य वाला, भाज 'यम' यही तें पुण्य कर्म है, इन्हीं मृति-वदना और विनती-प्रार्थना के भरोसे पर तू स्वर्ग में जाया चाहता है ? मूरव वा इनकी धृव अर्याँ है पर जान दिखकृप नहीं, तुने जो कुछ किया कबल लोगों को दिखनाने का, जो नें कुछ भी नहीं। जो तुने एक बार भी जो से पुकारा होता कि दीनयेंदु दीनानाय दीनहिवकारी ! हुक पायी, महाभरथाँ, हृदये हुए को पदा और हृत्ता-दृष्टि कर, तो वह तेरी पुकार नीर की तरह तारों से पार पहुँचाँ होती। राजा ने तिर नाँचा कर निरा उत्तर कुछ न दन आया।

पद-महापद

सुग-रुप्या—यम क इन में सुग जल के मने पर हारने का...
 ...
 ...
 ...

अनगिनत—(अगणित) अन—नही, गिनती—गिनती, गोप
गनेश—मूल्य ।

अभ्यास

- १—इस पाठ की भाषा में क्या विशेषता तुम्हें शायद होती है ?
- २—वर्तमान लुढ़ी बोली और इस भाषा में क्या अंतर है, अहाँ को जान पड़ता है वहाँ परिवर्तन कर्म ।
- ३—कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिये, इस कहानी में शब्दों का कौन सा परिवर्तन होना है ?
- ४—इन्हीं शब्दों में कौन कौन से लिखा जाता है, मात्र उग लेकिन माथ का माथ न छोड़ा ।
उनका पत्र . . . हो गया और उन्हें उन्नी डीर दया रखा ।
तबका तबका फिर पर उड़ने जरा भी न दिया ।
गंगा के तीरे में समझ . . . जगमगा उठा ।
- ५—इसी प्रकार के अन्य वाक्य चुनो और उनमें यथाचित परिवर्तन करो ।
- ६—इस कहानी में क्या उपदेश मिलता है, उस पर तुम्हारा क्या विचार है ?
- ७—इस पाठ के उद्देश्यों के स्थान पर हिन्दी के उपयुक्त शब्द रखो
- ८—अपने वाक्यों में प्रयुक्त कौन-कौन से शब्द लिखो—
दही मीठ लेगा, बे मीठ का घर है, आन की आन, पर
में न उड़ना, अग्नि खोलना ।
- ९—कौन-कौन से शब्द हैं, इनके पर्यायवाची शब्द लिखो—
लुढ़ी, जगमगा धरना, जिरे, मारने, दूध, परकटे ।
- १०—'इन शब्दों में प्रयुक्त रूप हैं, निम्न निम्न शब्दों में प्रयुक्त करो—
मथ मथ हा . . . उद आन उम मरी
- ११—इस कहानी के . . . कहानी तुम को . . . लुढ़ी . . . मरुती . . . दि
क

(५) कर्तव्योत्तेजना

पुरष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।

पुरष क्या पुरुषार्थ हुआ न जो।

हृदय की मद दुर्मलका उजो।

प्रबल हो तुमने पुरुषार्थ हो—

सुखम कौन तुम्हें न पदार्थ हा ?

प्रगति के पद में विचरो, उठो;

पुरष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥१॥

न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है।

न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।

समस्त ही यह बात पदार्थ है—

जि पुरुषार्थ वही पुरुषार्थ है।

सुखन में सुख-शक्ति भरो, उठो;

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥२॥

न पुरुषार्थ बिना वह स्वार्थ है।

न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।

न पुरुष हो बिना उठो उठो

न पुरुष हो बिना उठो उठो

सफलता बर तुल्य धरो, उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥३॥

न जिममे कुछ धारण हो यहाँ—

सफलता बह पा सकता कहाँ ?

अपुरुषार्थ भयंकर पाप है,

न उममे यश है, न प्रताप है ।

न कृमि-काँट-ममान कर, उठा

पुरुष हो, पुरुषार्थ करा, उठा ॥४॥

मृज-जीवन में, जय के लिये—

प्रथम ही दृढ़ परीक्षण चादिए ।

विजय ता पुरुषार्थ बिना कहाँ

कठिन है चिरजीवन भा यहाँ ।

भव नहा, भव-सिंधु तरो, उठा,

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठा ॥५॥

यदि अनिष्ट बढ़े, बढ़ते रहें ।

विपुल विपन्न पड़े पलत रहें ।

इदम म पुरुषार्थ रह भरा—

नलति उभा, नन उया उभा उया उभा

नलति उभा, नन उया उभा उया उभा

नलति उभा, नन उया उभा उया उभा

यदि अभोष्ट तुम्हें निज स्वत्व है;
 प्रिय तुम्हें यदि मान-महत्त्व है ।
 यदि तुम्हें रखना निज नाम है;
 जगत में करना कुछ काम है ।
 मनुज ! तो श्रम से न डरो, उठो,
 पुरुष हों, पुरुषार्थ करो, उठो ॥७॥

(२)

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे

विचार ला कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी;
 मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करे सभी ।
 दृष्ट न यों सु-मृत्यु तो दृष्टा मरे, दृष्टा जिये;
 मरो नहीं वहां कि जो जिदा न आपके लिये ।
 यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप हो सदा धरे,
 वहां मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥१॥

उसी उदार को कया मरस्वती बखानती;
 उसी उदार में धरा कृतार्थ-भाव मानती ।
 उमा उदार को मदा मजाव कीर्ति कृतती
 तथा उसी उदार को ममत्त्व नृष्टि दृष्टती ।
 उदा उदार = उमास विश्व में भर,
 उदा मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥१॥

सुधार्यं इतिदेव ने दिया करस्थ बाल भी,
 तथा दधीषि ने दिया परार्थ अस्थि-जाल भी ।
 उगानर-क्षितीश ने स्वर्मास दान भी किया,
 महर्षि धीर कर्ष ने शरीर-धर्म भी दिया ।
 अनिन्य देह के लिये अनादि जीव क्या हरे,
 वही मनुष्य है कि जा मनुष्य के लिये मरे ॥३॥

सदानभूति चादित्, महा विभूति है यही,
 वशाहृता सदैव है वगी हुई स्वयं मही ।
 विद्वद्व-वाद युद्ध का दया-प्रवाद में यही;
 विनीत लोकवर्ग क्या न सामने भुका रहा ?
 अहा ? वही उदार है परापकार जो करे,
 वही मनुष्य है कि जा मनुष्य के लिये मरे ॥३॥

रहा न भूल के कभी मदीय तुच्छ चित्त में,
 मनाथ जान आपको कग न तर्क चित्त में ।
 अनाथ कौन है यही शिरोकनाथ माथ है,
 दयालु दोनवधु क बह विजाल हाथ है ।
 अनीव भाग्यदान है, अथार भाव जा भर,
 वही मनुष्य है कि जा मनुष्य के लिये मरे ॥३॥

अनन्त अनन्तिल में अनन्त देव है स्वदे,
 समल हा स्व-वन्दु जा वही रघु बडे बडे ।

परम्परापर्यन्त मे बड़ा, तथा बड़ा सभी,

अभी असत्य-शोक में अर्पक हूँ बड़ा सभी ।

रहो न यों कि एक में न काम और का मर,

बड़ा मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥६॥

“मनुष्य-मात्र बंधु है” यहाँ बड़ा विवेक है;

पुराणपुराण स्वभू पिता इतिह एक है ।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,

परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।

अनर्थ है कि बंधु हो न बंधु को व्यथा हरे,

बड़ा मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥७॥

—मैथिलीशरण गुप्त

पाठ-सहायक

अपवर्ग - के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ

मनुष्य के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
मनुष्य के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
मनुष्य के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
मनुष्य के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
मनुष्य के लिये देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ

यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ
यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ

अन्यथा

यहाँ देना - यदि अनिष्ट अड अडने रहे" यहाँ

२—प्रथम कविता का सागरा लिखकर उस पर एक लेख लिखो जो उसकी सदा पान्थियाँ कटाप्र करो ।

३—द्वितीय कविता के आधार पर एक पत्र अपने किसी मित्र लिखो जिसमें इसकी कुछ पंक्तियों का उपयोग करो ।

४—द्वितीय कविता के छंद २ में "उसी उदार" पद की क्यो पुनरुक्ति की गई है, इसी प्रकार तुम भी किसी पद की पुनरुक्ति करो ।

५—क्या अर्थ है, वाक्यों में प्रयोग कर समझाओ—

परस्परायलय, अतैरैक्य, अमर्त्यश्रंक, आत्मभाव, पशु-जा

६—गुणवाचक सहाय बनाओ—

परस्पर, विवेक, प्रमाण, खेजना ।

दुर्ग प्रकार भायवाचक सहाय बनाओ—

समय, प्रमाण, बंधु, तुच्छ ।

७—सविग्रह समास बताओ—

परस्परायलय, पुराणपुरुष अखंड, आत्मभाव, पशु-जा
विलोक नाथ ।

८—दोने शब्द लिखो जिनके समानार्थ करा जा सके—उनका भी करो—श्रंक, तक्र, बाद ।

९—अन्तर बनाओ और प्रयोग करो—

अवश्य, अ वश्य सामने—साम में ।

१०—भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयुक्त करो—

काम तथा अर्थ भाव जान ।

११—

१२—

सकन

१३—

१४—

मुनाना

जाना है। उसके निकट हो चकरो आदि कोई पशु बाध दिए जाता है। रात को जब शेर उसे खाने आता है तब शिकारी मवान पर से उस पर गोली धकाता है। दूसरी विधि यह है कि लोग एक विशेष ढंग से शेर का समझाकर जंगल के एक सुते स्थानमें से आते हैं। वहाँ शिकारी हाथियों पर बैठे हुए दिन के समय उसे बंदूक का निशाना बनाते हैं।

शिकारी लोग पहली विधि को उनका पसंद नहीं करते। यह विधि तो खली के आस-पाम से आतों और बाघों के मारने के लिये ही उपयुक्त समझी जाती है। दूसरी विधि—हाथियों पर से दिन के समय शेर का गोली से मारना—मेष प्रकार से अच्छी है। इसमें शिकारी को बोरता भा दूरी जानी है।

राजा लोग जब हाथी पर सवार होकर शेर का शिकार खेदने आते हैं तब उनके साथ बहुत-से मशहूर सिपाही और भाडियों का हिलाकर शेर को हाँकनेवाले एक विशेष जाति के मनुष्य भी रहते हैं। ये लोग शिकारी कहलाते हैं। कौड़ीयों से ये वही काम करते हैं। इनको शेर के स्वभाव का वैदिक ज्ञान रहता है। शेर जब रात को मार के बाद मवेशी खाता है तब ये उसका ध्यान रखते हैं। इनके हाथ में लम्बा लम्बा माटिया हाथी है, काटा क मिर पर भाग लगाने के लिये तैयार बना जाता है ताकि भाडियों को दिलाकर शेर का आग हाकन मारने में मदद करनी मनुष्य पर आक्रमण करे तो उस भाव मारना पसक।

अथ गोलों स्थाकर भाग जाता है । एक रास्ता कोई पचास या छत्तर मील तक चला जाता है और पर्वत के पैर से शारंभ होकर उसकी चोटी तक चला जाता है । जंगल में लकड़ा और घास इन्हीं मार्गों से काटी जाती है । ये मार्ग शेरों को एक जंगल से दूसरे जंगल में लाने में बड़ा काम देते हैं । इस मार्ग को काटते समय ही शेर पर गोलों चलाई जा सकती है । पर्वत जंगलों में, पर्वतों की चोट के कारण, निशाना लगाना कठिन होता है ।

शिकारी लोग शेर को ससकारकर इन सुले रास्तों में आते हैं । तब राजा लोग हाथी पर से उस पर गोली चलाते हैं । काटने के लिये सधमें अच्छा समय दिन का तीसरा पड़ा होता है । हाथी ऐसे सधे होने हैं कि वे शेर को मुँहलाकर भागने पर भी अपने ध्यान में नही हिलते । प्रत्येक हाथी महाबल के अनिश्चित तीन चार बंदूकवाले मनुष्य भी रहते हैं ।

राज का पैर भर खाने के बाद दिन में सोये हुए शेर को जंगल में लाने का कष्ट नही करे वाला, यह कहना है ।

जब शेर जंगल में लाने का पार करत समय घुड़-पार करने के लिये शेर को पर्वत के पैर तक गोलों के

द्वारा शेर को जंगल में लाने का कष्ट नही करे वाला, यह कहना है ।

जब शेर जंगल में लाने का पार करत समय घुड़-पार करने के लिये शेर को पर्वत के पैर तक गोलों के

लकड़ों को आदमी बनाकर—उनके तिर पर पगड़ा, गले में कमीज़ और नाँचे पायजामा पहनाकर—इस खुले रास्ते के साथ-साथ एक पंक्ति में गाड़ दिए जाते हैं। कहते हैं, एक बार एक शेर ने, इनको सचमुच का आदमी समझ कर, इन पर आक्रमण कर दिया था। पर उनको भयानक सड़ा देखकर वह डरकर पीछे भाग आया था।

शिकारी लोग इन बनावटी आदमियों को बड़े छुपके से गाड़ते हैं, क्योंकि इराज्जी भी आदमियों पर 'धारियोंवाले जंतु' को संदेह हो जाता है और वह चढ़ पहाड़ के ऊपर भाग जाता है।

शिकारी लोग जब शेर को हॉकने लगते हैं तब विगुल का एक शब्द किया जाता है। तत्कालते समय भवत्याम्ही के अनुसार कभी तो शिकारी बिलकुल छुपचाप रहते हैं और कभी शोर करते हैं। शेर का शिकार करते समय कभी कभी लकड़बग्घे और साँभर आदि जंतु भी निकल आते हैं।

शेर का सपसे कमज़ोर भाग उसके कंधे होते हैं। यहाँ गोली का पातक भाव लगता है। पायल होकर शेर कभी कभी इतने जार से आक्रमण करता है कि वह उछल कर हाथ के पीछे पर पहुँच जाता है। शेर के आक्रमण करने पर हाथ भय से चिड़ाए जाते हैं। तबकी हाथ ही शेर वहीं

कई बातें आदरकार से विद्वानों से परमात्मियों को
 हीन हीन करने हैं। परन्तु उनके मन में विद्वानों से परमात्मियों
 आदरकार से कम नहीं है। जब तक मन को अधिक
 दृढ़ता से आत्मिक से जोड़ना न लगे तब ही परमात्मियों को
 कर्मों से आदरकार से हीन बातें बहुत अधिक हासिल करने
 में हैं। इसके द्वारा हीनता को मन से दूर करने
 से परमात्मियों से हीनता ही दूर होगी।

कर शिकारों पर आक्रमण करता है। फिर भा विंजरा से
से चरखा होता है।

शेर शिकारमें निरस्तब्ध बन में खुपचाप बैठकर इन मूँ
जंतुओं के आने की प्रतीक्षा करना बड़ा रोमीचकारा है
है। पित्ररे में बंद चाप एक लंबा चौड़ा जंतु देना पड़ता है
पर जंगल में उसके पाले और काले धब्बे उसके इडे-गिरे
धीर्ता के साथ पूर्णरूप में मिल जाते हैं। दृष्टों के पने
में से छनकर पड़नेवाले मूँ के प्रकारों के कारण इस
पटनानता और भी कठिन हो जाता है।

यह एक दूसरे प्रकार के शिकार का दाल मुगिए।
भारत की नदियों में बहुत पाया जाता है। जो भी जंतु
मनुष्य इसके पने में पंग जाय वह उसे घमांट कर पानी
में लेता है। विशेष धीमियों शिर्षों और बरबे, नदियों
नदाते हुए, बड़े बड़े बहिष्वालों के पास पनते हैं। यह
जंतु घरनों मधुपुल दूँ की लपेट में घबने आसरे को
में गिरा देता है। फिर उसके हाथ या पैर पकड़कर
पानी के नीचे घमांट ले जाता है। जब वह दुपकर भर
है तब वह उसे पुरमल क बल निगल जाता है।

सारा दालका क समय नदी में एक एक शिकार को
यह दू। नदी में नदी में नदी में नदी में नदी में नदी में
नदी में नदी में नदी में नदी में नदी में नदी में नदी में

हैं वहाँ तककर गोली मारता है । मगर को यहाँ जगह सयसे कमज़ोर होता है ।

गान्ना खाकर मगर अनेक धार नदों में भाग जाता है । फिर इसका पकटना कठिन होता है । नदियों के किनारे एक विशेष जाति के लोग रहते हैं । वे मगरों से मिलकुल नहीं रहते । वे लँगोटा पहन कर, दाघ में घाँस लिए, घड़ियालों से भरो हुई नदों में घुम जाते हैं, और जहाँ पानों में से ऊपर को लहू निकलता दायता है वहाँ घाँस से टटोलकर लुकी लगाते हैं और घायल जन्तु को किनारे पर घसीट लाते हैं । कहते हैं, इन लोगों के शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध आता है । इससे मगर इनको नहीं खाता ।

जंगला सूँघर भी बड़ा भयानक जंतु है । घायल हो जाने पर यह शिकारी पर बहुत चुरी तरह से आक्रमण करता है । यह सवार के घाँटे की टाँगों को अपने मज़बूत और तोड़खट्ट दाँतों से चोर कर उसे गिरा देता है । तब शिकारी का बचना कठिन हो जाता है । इस समय शिकारी के लिये प्राण-रक्षा का एक ही उपाय रह जाता है । वह यह कि वह निश्चल पड़ा रह उभक जरा-भा भा हिलने-डलने पर सूँघर नीर की तरह उस पर अघटन है और एक मकड़ से उसका चार डालना है । तब मगर का धरना ही न हो सकेगा और बाँझ्या से सूँघर का दूर दूर भागना संभव है । पर साँझ्या का महाभय का निवारण करे । तब सूँघर से बचने में निश्चय ही दूर जगता है ।

उतने में सूअर मनुष्य का काम लभाम कर देता है। इन्हीं रजा की आशा चुपचाप पड़े रहने ही में है।

दजाय में एक विशेष जाति के लोग जाल लगाकर से ही सूअर को मार डालते हैं। कुछ वर्ष हुए रावी-जलो किनारे इन लोगों को सूअर का शिकार करते देखने का मर लेखक को भी मिला था। सूअर के जाल में पड़े उन लोगों ने इसे कौश्री भरकर गिरा दिया और ंडे मार कर मार डाला। इस कुरती में एक आदमी का हाथ के दाँतों में घायल भी हो गया था।

खरगोश और हिरण के शिकार में बाजों, शिकारी कुत्तों से सहायता ली जाती है। एक समय एक शिकारी में सम्मिलित होने का मुझे भी मौका मिला था। वही खरगोश कुत्तों से घबकर छिप गया। परंतु ऊपर उड़े बाज ने उसे देर लिया। वह उम पर झपटा और कानों पकड़कर उसे आकाश में ले उड़ा। जब तक कुरे वहाँ न पहुँ गए वह उम आकाश में ही उठाए रहा। उनके पहुंच जाने हमने उसी पृथ्वी पर गिरा दिया और कुत्तों ने उसे दबाव लिद

पाँट-सहायक

वर्तुता-विन—अपिचना, देना जैसे बना है। आक्रमण—एक मस्तिष्क—दिमाग, अकस्मात्—अचानक, बना हुआ।

अभ्यास

1.—रेर का शिकार केन कर बना है, मनुष्य में लिखो।

- २—दोष काटि की प्रकृति का रोग प्रतिबिम्ब नहीं दीखता है !
- ३—इन जीविताने शब्दों को देखो श्रीम इन्द्रा के समान अन्य जोड़े-वाले शब्द लिखो —
 इन्द्राभिर, बाना कूर्मा, ज्ञान राम, लम्बा चौड़ा ।
- ४—भावार्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —
 दीग हाडना, शूनु का शाब्दान करना है, निराना बनाना,
 बान नमान करना ।
- ५—अन्य शब्दों और प्रयोग करके समझाओ —
 धीरे-धीरे, धीरे से धीरे, बड़े बड़े, बड़े से बड़े, बड़े के बड़े ।
- ६—यहाँ किन शब्दों के साथ दो वाक्यों की विभक्तियाँ लगाई गई हैं, और क्यों ! इसी प्रकार के तुम भी कई उदाहरण दो ।
- ७—भिन्न भिन्न मात्राओं से वीन वीन शब्द बन जाते हैं—
 अमल, शेर, जाने, दैल, खुले ।
- ८—ध्याख्या करो और समझाओ कैसे बने हैं—
 सुइदौड़, बनावडी, समकारना, आस-पास, पापनामा ।
- ९—मूल शब्द बताते हुए निम्न लिखो—
 पैटक, अवशिष्ट, हिस ।
- १०—प्रथम अनुच्छेद का वाक्य-विश्लेषण करो ।
 संकेत—
 १—अन्य पशुओं के शिकारों का परिचय देना ।
 २—नदरों में घेरी रियासतों को दिखाकर हाल बताना ।

(७) आप

भना बतनाइए तो आप क्या हैं ? आप कहते हैं
 बाबू ! आप तो आप ही हैं । यह कदा का आपदा भी
 यह भी कोई पूछने का ठंग है ? पूछा होता कि आप को
 तो बतला देते कि हम आपके पत्र के पाठक हैं और
 माध्यम-संपादक हैं अथवा आप पंडित जी हैं, आप
 जी हैं, आप सेंट जी हैं, आप लाला जी हैं, आप बाबू
 हैं, आप मियाँ साहब, आप निरं साहब हैं । आप क्या
 यह तो कोई प्रश्न को रोति ही नहीं है । वाचक महाराज
 यह हम भी जानते हैं कि आप आप ही हैं और हम भी
 हैं, तथा इन साहबों की भी लंबी धोनी, घमकीली पाशा
 सुट्टिहई बैंगरग्या (मिरज़ई), सीधो भांग, चित्तायती चान, ई
 दादी और साहबानी हथम हा कहे देती है कि—

‘किम राग की है आप दवा कुछ न पूछिए,’

अच्छा साहब, फिर हमने पूछा तो क्यों पूछा ? इसी कि
 कि हमें आप 'आप' का ज्ञान रह्यन है वा नहीं ? जम 'आ
 का आप' अपन 'जय लय' औरा क प्रानि दिन-रात में पर
 रह्यन है वह आप क्या है ? इसक उत्तर में आप कहियेगा

..... नव बने, ..

एक सर्वनाम है। जैसे मैं, तू, हम, तुम, यह, वह आदि हैं वैसे ही आप भी है, और क्या है। पर इतना कह देने से न हमको संतोष होगा न आप ही का शब्द-शास्त्र-ज्ञान का परिचय होगा, इससे अच्छे प्रकार कहिए कि जैसे 'मैं' का शब्द अपनी नम्रता दिखलाने के लिये विद्यो की बोली का अनुकरण है, 'तू' शब्द मध्यम पुरुष की तुच्छता व प्रीति के सूचित करने के अर्थ कृत्ते के संवाधन को नकल है। हम, तुम संस्कृत के अहं और त्वं के अपभ्रंग हैं, यह और वह निकट और दूर की वस्तु वा व्यक्ति के दायतार्थ स्वाभाविक उच्चारण हैं, वैसे 'आप' क्या है? किस भाषा के किन शब्द का शुद्ध वा अशुद्ध रूप है और आदर ही में वृद्धा क्यों प्रयुक्त होता है ?

हुजूर की मुलाज़मत से अष्ट-नेइस्टेज़ा दे दिया होता दूसरी बात है, नहीं तो आप यह कभी न कह सकेंगे कि "आप लफ़्ज़े फ़ारसी या अरबील," अथवा "ओः ! इटिज़ एन इंगलिश वर्ड," जब यह नहीं है तो साहमन्नाह यह हिंदी-शब्द है, पर कुछ निर-पैर, मूढ़-गोढ़ भी है कि यों हो ? आप छूटते ही सोच नकते हैं कि संस्कृत में अप कहते हैं जल को और शाखों में म्निना है कि विधाता ने मृष्टि की आदि में उलो को बनाया था तथा त्रिदो में पानी और फ़ारसी में आव का अर्थ गोमा अथ च रानेवा आदि हुआ करता है, जैसे— "पानी उतरि गा तरवाग्नि का वः काह नो क सोच विक्राय", तथा "पानी उतरिगा रत्नपुत्र

... का शब्द है।

का यह फिर बिसुधी से (वेत्रया से भी) बढि जाये, ई
प्राग्मी में 'घावक व्याक में बढ घावनी मिला बैठे हैं' ए

इस प्रकार पानी की व्यंष्टना और प्रवृत्ता का विचार
सौग पुत्रों को भी उमी के नाम से घाव पुकारने लगे
यह घावका समझना निरर्थक तो न होगा, बहान
का अर्थ अरथ निकल आवेगा, पर सांपत्तिय कर सौ
ही यह शिका भी कोई कर बैठे तो अयोग्य न होगे कि
के जन, वारि, घट्ट, नीर, मेघ इत्यादि और भी ना
हैं उनका प्रयोग क्या नहीं करने, "घाव" ही के सुलभ
पर कहा जाता है ? अथवा पानी की मृष्टि मरक
के कारण बह ही लोगों का उनक नाम से पुकारिये तो
पुष्ट हो सकता है पर घाव ना अथवा मं छोटी को
घाव कहा करते हैं, यह घावही कीतनी विज्ञा है ?
ही भी कह सकते हैं कि पानी म बृह गारु जिनने है
एवं एवकी नीचे हा टानी है । ना क्या घाव हमकी
एव एव कहते अथवामी अथा भादव है ? इति
है कि घाव पानी एव टानी तो इव घाव के रहने टानी
हो कति और कि कती यह एव टानी पर ही न कती

एव एव मृष्टक घावम से घाव घाव की वाक्य
कहा है यह एव टानी एव कती अथवा कति
कति एव टानी कति एव कती एव कति एव कति

खंडन नहीं कर सकता कि प्रेमी-समाज में "आप" का इ
नहीं है, र ही प्यारा है।

संस्कृत और फ़ारसी के कवि भो त्व और र हे
भवान् और शुभा (र का बहुवचन) का बहुत आदर
करते। पर इससे आपका क्या मतलब ? आप अपनी
कं 'आप' का पता लगाइए और न लगे तो हम बलवा
संस्कृत में एक आप शब्द है, जो सर्वथा माननीय ही प्र
आता है, यहाँ तक कि न्यायशास्त्र में प्रमाण-चतुष्टय (द
अनुमान, उपमान और शब्द) कं अंतर्गत शब्द-प्रमाण का
ही यह लिखा है कि "आप्रापदेशः शब्द" अर्थात् आप
का वचन प्रत्यन्तदि। माणों कं समान ही प्रामाणिक हो
वा यों समझ लें कि आप जन व्यक्त, अनुमान और उ
प्रमाण में सर्वथा। साधित ही विषय को शब्द-बद्ध करते

इसमें जान पड़ता है कि जो मय प्रकार की विद्या, बु
मत्त आपदादि सदगुणा से मयुक्त हो वह आप है, और
नागरी भाषा में आप शब्द मयक उच्चारण से महज में
आ सकता, इसमें उसे सरल करके आप बना लिया ग
और मयम पुरुष तथा अन्य ंरुष क अन्यन्त आदर का
करने क काम में आता। तुम बहुत अच्छे मय्य हा
उ शब्द म जन है —। मा कहने में मयच मित्र या पना
गन्तवान् वैम । नर शकुलिन । विम गाना हो जायें
उपवहार-कु । न नाकावागी पुरुष तथा अपना उचित सम

निर्भोगे जय कहा जाय कि "आपका क्या कहना है, आप । बस सभी बातों में एक ही हैं" इत्यादि ।

अब तो आप नमस्कृत्य होंगे कि आप कहीं के हैं, कौन से हैं । यदि इतने बड़े बात के बतगट से भी न समझे जाय तो इन छोटों से कथन में हम क्या समझा सकेंगे कि 'आप' संस्कृत के आप्र शब्द का हिन्दारूपान्तर है और गान्धीय अर्थ के सूचनार्थ उन लोगों (अथवा एक ही व्यक्ति) के प्रति प्रयोग में लाया जाता है जो सामने विद्यमान हों, बातें बातें करते हों, चाहे बात करनेवालों के द्वारा पूछे-बताए जा रहे हों, अथवा दो वा अधिक जनों में जिनकी चर्चा हो रही हो ।

कभी कभी उत्तम पुरुष के द्वारा भी इसका प्रयोग होता है, वहाँ भी शब्द और अर्थ वही रहता है; पर विशेषता यह रहती है कि एक तो तब कोई अपने मन से आपको (अपने तर्क) आप हो (आप्र हो) समझता है, और विचार कर देखिए तो आत्मा और परमात्मा को अभिन्नता या तद्रूपता कहीं लेने भा नहीं जानी पड़ता, पर बाह्य व्यवहार में अपने को आप कहने से यदि अहंकार को सब समाप्त तो यों समझ जायगा कि मैं काम अपने हाथ में किया जाता है और जो बात अपना नमस्कृत्य कर जना है उसमें पूरा विश्वास है । अतः आप कहना है कि हम आप

कर लेंगे। अर्थात् कोई संदेह नहीं है कि हमसे वा
संपादित ही जायगा, 'हम आप जानते हैं' अर्थात्
वतज्ञाने की आवश्यकता नहीं है, इत्यादि।

सद्वाराहोय भाषा के आपाजी भी उसीम वि
पौर आर्य के मिलने से इस रूप से ही गए हैं तथा
वा म माने, पर हम मता मकने का माहम करते हैं
के अरु (पिता, बोलने से अरु) और पूरुपोय ।
पाश (पिता) पाप (धर्म-पिता) आदि भी इसी आ
हैं। हाँ, हमके ममभने-ममभाने में भी जो ऊपे
के अरु (मृत) तो इसके दई है, क्योंकि इस में
और दीर्घ दोनों अकार का स्थानापन्न (A) है, भी
को "वकार" से बन लेता कई भाषाओं की वा
टी (T) भी बह का "नकार" दई है। फिर कपी ३
कीर्तिपुगा कि अरु माहम द्वारा 'आप' वाप दई
से बने हैं।

इससे मति में बहुत-से उरुध अंश के बावज भी माने
को अरु कहने हैं, इसे कोई कोई जग ममभने है कि
माने के अरुवात का अरु है, पर यह इनकी ममभने
है। सुधममति भाइया क अरु कहत है अरु और
ममभने क अरु म अकार का अरुवात वातक भी क
इका बह दीर्घ 'अ' अकार दीर्घ 'आ' ममभने का
अरु है 'अ' अकार ममभने से, अरु माने क

शान्ति म्यूजांगो खां भीर द्वाज को टहो का ततो अर्थात् गरम
 हुआ जाय । फिर अर्थात् को अर्थात् कहना किन्तु नियम से
 ना ! हाँ, आप में आप और अर्थात् तथा अर्थात् को मृष्टि
 है, उन्को को अर्थात्वालों ने अर्थात् से अर्थात्तरित कर लिया
 जाता, क्योंकि इनकी घटमात्रा में "पकार" (पं) नहीं
 जाता ।

जो जिहा अर्थात्, आप, आप, अर्थात्, अर्थात्, अर्थात् आदि भी
 जो में निकलते हैं, क्योंकि जैसे पाशवा को कई धोनिधों में
 पकार' को 'पकार' व 'पकार' से अर्थ लेते हैं, जैसे पाद-
 मर्द—दादमर्द और पारसी—पारसी आदि, जैसे ही कई
 भाषाओं में मर्द को अर्थात् में 'पकार' भा लिया देते हैं, जैसे
 अर्थात् मर्द—अर्थात् अर्थात् तथा अर्थात्—अर्थात् अर्थात् अर्थात्
 और अर्थात् को अर्थात् के अर्थ अर्थात् का लेव भी हो जाता है,
 जैसे अर्थात् अर्थात् अर्थात् (अर्थात् अर्थात् अर्थात् में अर्थात्)
 अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात्
 हो जाता है, जैसे, अर्थात्—अर्थात्, अर्थात्—अर्थात्, अर्थात् । अर्थात्
 अर्थात् को अर्थात्, अर्थात् को अर्थात् अ, अ, अ, अर्थात् को अर्थात् अ
 अर्थात् को अर्थात् हो जाता है, फिर इन अर्थात् अ अर्थात् कि अर्थात्
 अर्थात् में अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात्
 को अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात्
 अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात् अर्थात्

अब तो आप समझ गए न, कि आप क्या हैं ? अब
 समझो तो हम नहीं कह सकते कि आप समझदारों के कौ
 ही आप ही को उचित होगा कि हमारा-सुदाम की समझ
 पसारी क यहाँ से मोल लाए, फिर आप ही
 श्रमिणा कि आप "कौन हैं ? कहाँ के हैं ? कौन के हैं ?"
 यह या न हा मकं और जेय गढ़ के आपे में बाहर हो
 तो हमारा क्या अपराध है ? हम केवल जी में का
 "शाश्वत ! आप न समझो तो आपा (अपने) को के
 पदों है' (है) ।" । अब भा नहीं समझे ? बाह !
 (निवृत्तवर्तीय ने) — १० प्रणमनायक

पाठ-महायक

दामनार्थ—दहादमाय, पानीदार—शामसम्मानी,
 गामी—अथ—नीचे + गामा, जनेकला, ऐसीवैसी—मर
 दुम—कुम्हल अथदनाह, आत्र पुदय—विद्वान्, स्व
 विद्वान् पुदय, अथच—ही, व्यति—अदमाय, दुदय अर्थ।

अन्वय

१. यदि आप हम ही जानेंगे तो आप ही हम ही जानेंगे
 २. आप...
 ३. ...
 ४. ...

३—यहाँ किस शैली की भाषा है, इसका वर्णन करके इस भाषा में दिखलाओ।

४—दिए गये वाक्यों में से एक वाक्य चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ, इसे ही वाक्य के अर्थ में लिखो।

५—वाक्य-विश्लेषण करके इसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 "दिलों की धापता से ... (उदाहरण के लिए) ..."

६—इसके अर्थ में वाक्यों का एक अनुसूची बनाओ।
 इसके, पर, यह, उसी, वह, काँट।

७—इस वाक्य में जोड़ने वाले शब्द चुनकर वाक्य को और अधिक अर्थ देने वाले शब्द लिखकर प्रयोग करो।

८—दिए गये वाक्यों में से एक चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 यह ही वाक्य में लिखो—

९—दिए गये वाक्यों में से एक चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर,

१०—दिए गये वाक्यों में से एक चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर,

११—दिए गये वाक्यों में से एक चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर,

१२—दिए गये वाक्यों में से एक चुनकर उसका अर्थ स्पष्ट कराओ।
 वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर, वाक्य चुनकर,

(=) शिकागो का रविवार

शिकागो संसार के प्रसिद्ध नगरों में से एक है। जहाँ व्यापक धनी ज्ञान-हीन-राकके तर-द्वारा स्थापित विरवविशास पर है। अमेरिका के बड़े बड़े कारखाने, पुस्तकालय भी यहीं हैं। इन कारखानों में हर एक काम के लोग काम करते हैं। इनके बड़े प्रसिद्ध नगर के लोग अपने अरकाश का समय कैसे काटते हैं ? वे अपना दिन कैसे बहलाने हैं ? इस नगरीय जीवन के लक्ष्य क्या हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर हम इस लेख में देने हैं। आइए, आपको शिकागो की सूर करवाते, इसके अजीब अजीब दिनों, और आपको बतलाते कि इस नगरीय नगर में कौन कौन स्थान दर्शनीय हैं। साथ ही हम शिकागो के निवासियों की रहन-सहन का अंश भी देने जाते हैं। जिससे आपको अमेरिका के इस प्रांतियों की जीवनशैली के विषय में भी कुछ ज्ञान हो जाय। इस काम के लिए हमें शिकागो का दिन चुना है। अभी की सड़िया का हम उस के से वर्णन करेंगे। इसमें हमारा असाध्य भा मित्र ही उगा हीर आपको यह भा साधुम हो जायगा कि शिकागो निवासियों शिकागो की छुट्टी किम तरह मानते हैं।

शिकागो शहर का दिन है। शिकागो में 312 क्षेत्र हैं।

शिकागो में जहाँ जहाँ ईसाई लोगों का राज्य है, मत्र कहीं कहीं और दफ्तरों में रविवार को खुलें रहती हैं। परंतु रविवार में खुलें कितने तरह माननी चादिर, यह बात ईसाई-धर्मावलंबियों को बाँच रहे बिना अच्छा तरह नहीं अनुभव की जा सकती।

ईसाई-धर्म में रविवार को काम करना मना है। इसलिए शिकागो में सब दुकानें, पुस्तकालय, कारखाने आदि इन दिन बंद रहते हैं। क्या निर्धन, क्या धनवान, क्या नौकर, क्या खानो, क्या बालक, क्या इष्ट, क्या खो, क्या पुरुष सबके निये मात्र खुलें हैं। १०ई या ११ बजे नियत समय पर प्रातःकाल प्रायः सब लोग अपने अपने गिरिजाघरों में जाते हुए दिखाई देते हैं। वहाँ ईश्वराराधना के बाद घर लौट कर वे भोजन करते हैं। फिर कुछ देर आराम करके सैर को निकलते हैं।

शिकागो बहुत बड़ा शहर है। संसार के बड़े बड़े शहरों में इसका तीसरा नंबर है। यहाँ एक "फ़ास्ट मूविंग्स" मर्यादा बजायबधर है। यह निश्चित भोजन के कितारे शिकागो विश्व-विद्यालय से घोड़ा ही दूर पर है। रविवार को मधेरे नौ बजे से शान के पाँच बजे तक, सबको यहाँ सुकू सैर करने का आज्ञा है। इसलिए इस दिन यहाँ बड़ा भीड़ रहता है। आठ नौ बजे के बाद-शानिकारों ऐसे ही खानों से बिद्या का आरंभ करते हैं, क्योंकि यहाँ पर संसार की इन सब अद्भुत बस्तुओं का संग्रह है, जो शिकागो के प्रसिद्ध मानसिक संज्ञे में शक्यता को गई थी। यहाँ यह बात पद्यात्मन दिखाई गई है कि पुरखों के

ऊपर प्राणियों का जीवन, प्राकृतिक नियमों के
 प्रकार वर्तमान व्यवस्था को पहुँचा है। कुल
 पदार्थों को भिन्न भिन्न कमरों में दरज-बदरजे
 क्रमिक-विकास अदृश्यो तरह बतलाया गया है।
 रूप से ज्ञान हो जाता है कि उत्तरीय कमरों
 किस प्रकार भिन्न भिन्न चारों अनुस्था में
 बदलते हैं। किस प्रकार प्रकृत माता वर्ष के
 भासन देती है। उत्तरीय धरम रत्नवाले रीति
 भीतर बने हुए पर रानी का अन्दा तरह दिखाने

यहाँ यह ज्ञान न बने मानुष दा ज्ञान है कि
 क प्राचीन ज्ञान के अन्तर्गत प्रकृतियों की पु
 रीत पर भरोसा करने पर प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत

प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत
 प्रकृतियों के अन्तर्गत प्रकृतियों के अन्तर्गत

अनुसार यहाँ उसे उष्णता पहुँचाई गई है और उसकी रक्षा में
गई है। उष्ण देशों के कई वृक्ष यहाँ देखने में आते हैं। शरीर
का वनस्पति-विद्या-संबंधी बहुत-सी धारें यहाँ मान्य हो जाती हैं।

स्थानों के सिवा बहुत-से और भी स्थान, लोगों के बैठने
उठने, ईसने-न्यतने के लिये हैं। शिकागो बहुत बड़ा नगर
है। इससे नगर-निवासियों के आराम और शुद्ध पवन की
प्राप्ति के लिये, बाय बोथ गलियों में "बुलवाइज" नामक
विहार-स्थल हैं। यहाँ की गलियाँ अपने देशों की जैसी नहीं
हैं। गलियाँ क्या एक शहर हैं। पत्थर के मकानों के फर्श
दोनों किनारों पर, पाँच फुट के करीब सड़क से ऊँचा रखकर
लोगों के चलने के लिये बना हुआ है। बाँच की सड़क गाड़ने
घोड़े, मोटर आदि के लिये है। न्युने मकानों और चौड़ी
सड़कों के कोनों पर भी हवा के साफ रखने और गरीब
आदिमियों के मनोरंजन तथा लाभ के लिये छोड़ी छोड़ी दूर
विहार-वाटिकाएँ हैं, जहाँ बैठने के लिये बेंचें रखी रहती हैं।

काम से थके हुए खो-पुस्तक रोज़ साँझकाल यहाँ दिखने
देते हैं, क्योंकि और स्थानों में गाने, बजाने और जल-विद्युत्
आदि के लिये छोड़ा-बहुत खर्च करना पड़ता है जो यो
आमदनी के लोग नहीं कर सकते। इनके लिये ऐसे स्थान
स्थानों और अजायबघरों में दूमने की स्वतंत्रता है। यत्न
किया गया है कि सबको इस स्वतंत्र देश में आने का प्रायः
का अवसर मिले। यहाँ जो धन व्यय किया जाता है वह

भारीभर भार मानसिक दाना प्रकार की इप्रति के लिये, किया जाता है।

यह ना दुर्दि दिन की रात, अथ रात की सुनिए। यहाँ बहुत-से नाटकपर, प्रदर्शनियाँ भार समाज हैं, जहाँ अपनी अपनी रचि के अनुसार लोग रात का जाते हैं। शिकागा में लोग अकूमर रात को निरजा म जान हैं। रात को भी यहाँ उपदेश, गायन और हरिकीर्तन हाता है। यहाँ एक जगह "हाइट सिटी" श्वेत नगर है। बहुत-से लोग यहाँ जाते हैं। इस जगह का श्वेत नगर इमलिये कहते हैं कि यहाँ विजली की शुध रोगनी हाती है, जिससे रात को भी दिन ही-सा रहता है, इसके विशाल द्वार पर बड़े मोटे मोटे विजली के प्रकाश के अक्षरों में "दि हाइट सिटी" लिखा हुआ है।

विजली की महिमा यहाँ रूध ही देखने को मिलती है। स्थान स्थान पर प्रकाशमय रंग-विरंगे अक्षर-चित्र बने हुए हैं, जो निनट निनट में रंग बदलते हैं। इस श्वेत नगर के भीतर अनेक मनोरंजक स्थान हैं। कहीं पर गाना ही रहा है, कहीं पर यहाँ 'हाली' में नाच हो रहा है, कहीं "सरकस" का तमाशा है। दुनिया भर के तमाशा करनेवाले यहाँ आते-जाते हैं। गरमी के दिनों में वे, तीन ही चार मास में, हजारों रुपए कमा लेते हैं। यह स्थान एक कंपनी का है। उसके नोकर भारी दुनिया में तमाशा करनेवालों को लाने के लिये घुमा करते हैं। भारतवर्ष के यदि दो तीन अच्छे अच्छे पहलवान,

किसी देशी कंपनी के भाव, अमेरिका में भावें तो इतना
रुपय कमाकर ले जायें। हमारे देश में अभी लोगों ने हाथ
पैदा करने का टग नहीं मीगा।

एक माशरुफ मनुष्य गणितज्ञान से आकर, हिन्दुस्तान
में शिक्षावनों-द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करके लाखों धरार कर
जाता है, परंतु हमारे स्वदेशी कारीगर, पहलवान, शायर
आदि सभी इस ओर जाने का साहस ही नहीं करते। अमे-
रिका में कुरती का शोक बट रहा है। यदि इस समय में
पहलवान बड़ा-सा रुपया खर्च करके इधर आके और किसी
अच्छा कंपनी को मारफत कुरती हो, तो लाखों रुपयों
वारे-धारे ही जायें।

इस श्वेत नगर में रविवार को बड़ा भारी मेला होता
है। गाडियां आ-पुर्खां में लदी हुई जाती हैं। हज़ारों रथ
इकट्ठे होते हैं। रात को ८ बजे से ११ या १२ बजे तक मे-
लना रहता है। यह स्थान केवल गर्मियों में खुलता है, क्योंकि
जाड़ा में शीत क कारण बड़ा कोई नहा आता। शीत-
के जिन नगर के नातर और अनेक स्थान हैं, जहाँ और
के मनोरंजन सब हाल है।

रविवार का दिन इस नगर में लोग इतना तरह-
करने से आनंद पाते हैं कि वे अपने-अपने काम-काज का भिन्न-
भिन्न-भिन्न समय पर आकर आते हैं। अनेक पान-
नगर में लगे हैं जो शीत-काल में ही खोलकर हमारे

पाठक का स्वरूप काला न समझें, पर और ऐसे शिक्षण ही नहीं-
 बल्कि शिक्षण-रूप से ही समझें हैं जिसका हमारे स्वदेश-आन्दोलन
 का मोक्ष है : वे हमारे स्वदेश को, अपनी लुप्तियों को जिन्
 तरह शिक्षित हैं : भंग कर, तब से कर, परतें उठाकर और
 बर्तों से सम्बन्ध में लिख कर, एक ही वे संभव ही नहीं
 जानते । यहाँ कुछ बड़े-छोटे लोग ऐसे हैं जो इन लुप्तियों में
 बड़े हुए हैं, बहुत से लोक-कथाओं को जो-जो-जो में साथ में समझ
 के प्रसार भी नहीं । यहाँ के शिक्षणों में बड़े-छोटे सब में ही
 एक मात्र ही बड़े-छोटे लोगों में बड़े में भावना ही प्रसार ।
 (संशोधन-विभाग में)

— बड़े-छोटे

संशोधन

संशोधन—संशोधन, संशोधन—संशोधन—संशोधन—संशोधन—
 संशोधन—संशोधन, संशोधन—संशोधन—संशोधन—संशोधन—
 संशोधन—संशोधन

संशोधन

- १—संशोधन में संशोधन की संशोधन की संशोधन है ।
- २—संशोधन में संशोधन की संशोधन की संशोधन है ।
- ३—संशोधन में संशोधन की संशोधन की संशोधन है ।
- ४—संशोधन में संशोधन की संशोधन की संशोधन है ।
- ५—संशोधन में संशोधन की संशोधन की संशोधन है ।

६—नए शब्द बनाकर प्रयुक्त करो—

बराबर, बकवाद, बग़ीगर, नगर, बड़ा ।

७—अभिन्न अनुच्छेद को मिलाकर कथ में लिखो ।

८—इस पाठ से मुझे क्या सिखाएँ मिथनी हैं ?

९—इस पाठ के आधार पर तुम अपने यहाँ छुट्टियों के व्यर्थ की कैसी व्यवस्था कर सकने से और पैसा को जानी बख़िर ?

१०—यद्यपि अनुच्छेद की सिखाएँ चुनो और उनकी मद व्यवस्था की

११—इस पाठ का सारांश लिखिए और उसे अपनी ओर से एक कथ में प्रयुक्त करो ।

संकेत—

१—शिकागो आदि स्थान नक़शे में दिखाना ।

२—भिन्न भिन्न प्रकार की चियाओ का परिचय देना ।



(६) काली-दमन

प्रभु दे: पर न निविंद-पद की,
 विरोधता ही करता प्रभुवर है;
 बरज जगत् उसका सुगंध ही,
 उसे बनाता बहु-शक्ति-प्राप्त है ॥१॥
 विविध रंगों युक्त है प्रभु के,
 स्वभाव रंगत उनका कर्म है।
 निदर-भी है निरंगे निरगत वा,
 प्रजापुत्रों मन की विदुषता ॥२॥
 स्वकृत होता विदुषता न भय है,
 न वाक्य शक्ति निरंक सनात है।
 कर्तव्य द्वारा कतना सदैव है,
 मनुष्य तो भी युक्त है प्रभाव में ॥३॥
 प्रभु रंगत प्रजापुत्र-रूप है,
 तर्क न ही उनका प्रभाव है।
 प्रभु न ही प्रभु क विदुषता है
 प्रभु न ही प्रभु क विदुषता है
 प्रभु न ही प्रभु क विदुषता है
 प्रभु न ही प्रभु क विदुषता है

मुपुष्य में मञ्जित पारिजात है,
मयक है श्याम विना कर्लक का ॥१॥

प्रवाहिता जा कमनीय धार है,
कनिंदजा की भवदाय सामने ।
विदूषिता में पहले अतोव घी,
विनाशकारी विष-कानिनाग में ॥३॥

जहाँ सुकोड़ा-मयि युक्त धार है,
वहीं पड़ा विन्तृत एक कुंड है ।
सदा उसी में रहता भुजंग था,
भुजंगिनी सग लिए सहस्रशः ॥५॥

गुहर्मट् श्याम समूह सर्प से,
कनिंदजा का केंपता प्रवाह था ।
सग रकार उभाव में सदा
विनाशकारी मारिता-पदधु था ॥६॥

१. सुकोड़ा-मयि युक्त धार है

२. वहीं पड़ा विन्तृत एक कुंड है ।

३. सुकोड़ा-मयि युक्त धार है

४. सुकोड़ा-मयि युक्त धार है

कर्मणि कृत्वा वा अत्र वा अत्रात् कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि वा अत्रात् कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि

कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि

कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि
 कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि

कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि

कदाग-शीशोपरि राजती रही,
 सु-मूर्ति शोभाभाव्य श्रो मुकुंद की।
 विकीर्ण-कारी कल-ज्याति घट्ट घे,
 भवाव-उत्फुल्ल-मुव्यारविंद था ॥

विचित्र थी शोश-किरीट की प्रभा,
 कमी हुई थी कटि में सुकाइनी।
 दुकून में शोभित कांत कंध था,
 विलंबिता थी बन-माल मोव में ॥२१॥

भदोश को नाथ विचित्र रीति से,
 स्वदस्य में थे वर डार को लिए।
 बजा रहे थे मुरली मुहुर्मुहुः,
 प्रशोभिनी, मुग्धकरी, विनोदिनी ॥२२॥

समस्त सर्पों संग श्याम ज्यों कड़े,
 कलिंद का नैदिनि के मुष्क से।
 लड़े किनारं जितने मनुष्य थे,
 सभी मदा उक्ति-भात हा उठ ॥२३॥

पिन्कोर जानी वनता भयानुरा,
 एक न एक विभिन्न मार्ग में।
 कनक न लपट का
 कनक न लपट का धार हा म ॥२४॥

शर्द्धु के अद्भुत-वेणु-नाद से,
मत्तर्क-संचालन से सु-युक्त से :
एष वशा-भूत समस्त सर्प धे,
न अल्प हातं प्रतिकूल सं

अगम्य अन्तः समीप शैल के,
जहाँ बड़ा कानन का शक्ति से
कुटुंब के माघ वहाँ अहीरा की,
मन्दर्प दे के इः अन्तः

न नाग काली तव से दिग्ग बट्ट
दुई वमी से अन्तः
ममाद नाटे मव लोग अन्तः
प्रमाद नाटे अन्तः

प्रेमप्रवास से)

कारवार, विद्याल—विद्याला, कदंबु—(कम् + अम्) का
 दुभगा- बुगी, विगहण्णा—निदा, मरुकार, यमभारि—
 मानुषुमारि—यमुना, मेकिनी वृष्णी उद्भेदित—उद्भे,
 मरुन, विभीष .—भवप्रद, रावणवपु ।

अभ्यास

१—इस पाठ में वे पदों का सूचक पाठ को जिनमें पूर्व
 कहे गए हैं ?

२—इ. म. ४ और ५ का अन्वय अथ ममभा का अर्थ ?

३—धीरुणा को तुलना यहाँ किन अन्वय अर्थों में की गई है
 विशेषतः अन्वय में प्रकट करें ?

४—धीरुणा में कौन कौन से विशेष अन्वयक गुणों का
 अर्थ लगाने ?

५—कालीया का बलान्तरुता के लिये कथा कथा है ? अन्वय
 अर्थों में कथा कथा ?

६—धीरुणा का अन्वय अर्थों में कथा कथा है ? अन्वय
 अर्थों में कथा कथा ?

७—धीरुणा का अन्वय अर्थों में कथा कथा है ? अन्वय
 अर्थों में कथा कथा ?

८—धीरुणा का अन्वय अर्थों में कथा कथा है ? अन्वय
 अर्थों में कथा कथा ?

९—धीरुणा का अन्वय अर्थों में कथा कथा है ? अन्वय
 अर्थों में कथा कथा ?

-भीकृष्ण और रघुना जी के पर्यायवाचक शब्द चुनो, साथ ही
विरुद्धों के शब्द बताओ—

उत्कल, प्रीतिरात्र, सुगंध, रसाल ।

-भिन्न भिन्न अर्थ बताकर उदाहरण दो—

रसाल, चारों, काल, घड़ी, भीत, शूल ।

-अव्यय रूप लिखकर प्रयुक्त करो—

मत्त, पूतार, हिमाल, दक ।

त—

-भीकृष्ण के समर्थ में ऐसी ही अन्य कथाएँ बनाना ।

(१०) सर चंद्रशेखर वेंकट रमन

रमन महोदय का जन्म ७ नवंबर, सन १८९४ ई. में त्रिचनापल्ली में एक साधारण वंश में हुआ था।



पिता को वहीं किसी स्थान पर शिक्षक थे। रमन के जन्म के कुछ ही दिनों बाद वास्कोडिगा में थापकी गणित के सर का स्थान मिल गया। चंद्रशेखर वेंकट रमन भौतिक शास्त्र के सर्वप्रथम पंडित के माय ही माय में था। अनुराग रमन

सर सी० वी० रमन

वास्कोडिगा में रमन महोदय की वैज्ञानिक प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। आरंभ में ही भौतिक विज्ञान विद्या में थापकी इतिहास करने की राय दी थी, परन्तु तब ही वास्को रमन ने इच्छा की कि मैं ही भौतिक विज्ञान में ही अपना जीवन व्यतीत करूँगा।

रमन महोदय का जन्म ७ नवंबर १८९४ ई.

दो० ए० का परीक्षण-पत्र निकला । रमन सर्वप्रथम थाए
 र भौतिक जगत् का 'स्वतः स्वयं-पद' प्राप्त किया ।
 एवं उपरान्त थाएने भौतिक जगत् में एन० ए० की पदार्थ
 रंभ की । एव. दिन की यात है कि थाएके एक सहपाठी
 ए० वी० क्यपाराव की नादशास्त्र क एक प्रयोग में कुछ
 देह गृह्य और उनका निराकरण करने के लिये थे थाएने
 फेनर जॉन के पास गए । परंतु पा० जगत् उस समय उन
 देह का निराकरण न कर सका । था रमन महोदय ने उन
 योग को स्वयं किया और उस विषय पर लार्ड रेली महोदय
 कनाथ की पढ़ने के उपरान्त उन प्रयोग को करने का एक
 बीत तराकी निकाला, जो पुराने तराके में कहीं थाएला था ।
 म नवीन तरीके की प्रशंसा स्वयं लार्ड रेली महोदय ने की
 और वाचक रमन के पास थाई का पत्र भेजा । उन घटना से
 उत्साहित हो रमन ने उस विषय पर एक गवेष्टा-पूर्ण लेख
 लेखकर लंदन के 'मिड वैज्ञानिक पत्र "फिनासॉफिकल
 रंगजोन" में भेजा जिसका उनके संपादक ने सहर्ष
 वीकार किया दूसरे वर्ष एक और लेख जिसका प्रकाश-
 था लेखक दूसरे पत्र "नगर" में
 लेखक ने सहर्ष कर

रमन महादय सिर्फ वैज्ञानिक ही नहीं हैं। उनके संघर्षों का विचार भी बड़े बड़ों हैं। इसका आभास विरसविद्यालयों में दिए गए उनके भाषणों से निःसंदेह आपके भाषण बड़े ही सरस और सुंदर होते हैं। रहन-सहन भी बिलकुल सीधी-सारी है।

आप अपने छात्रों पर विशेष कृपा रखते हैं। छात्र भी आप पर बड़ा श्रद्धा रखते हैं। आपका अपने-अपने भिन्न-भिन्न सम्मानित पदा पर सुरामित है। आपकी एक निजी प्रयोगशाला है, जिसमें आप अपने-अपने काम करने का काम करते हैं। आप अनेक-अनेक सेवा-सेवाओं के सदस्य भी हैं। भारत में अपने-अपने क्षेत्रों की सेवा ही व्यक्तियों को इस संस्था के सदस्य होने का श्राव है।

श्री रमन महादय की आप सभी सेवा ही है। आपका बड़ा भाव है, जिससे आप विज्ञान की इस संस्था का जीवन बड़ा मर्म।

(आपकी सेवा)

— श्री रमन महादय

श्री रमन महादय

श्री रमन महादय की आप सभी सेवा ही है। आपका बड़ा भाव है, जिससे आप विज्ञान की इस संस्था का जीवन बड़ा मर्म।

अध्यात्म

मो० २०० रत्न का चरित्र जानन कैसा था ? उनकी प्रवृत्ति
जानने में विशेष ध्यान !

जैसे 'कन' नदीजि का वाक्यों में नाम जानना !

के लोचन की प्रकृत (रूप) प्रकृत हुई, छंद में क्या करते हैं ?

के लोचन में क्या उपदेश, मलिन है ?

आशुतोष के वाक्य में क्या जानन हो ?

जैसे शक्यों में प्रयुक्त करा कौन भाषणें जानने—

प्रतीक्षा समझ उठनी, सेवा पर विश्वास न करना, छाप पढ़ना,
पर पर आरुढ़ होना, मुक्त बचने ।

शब्द है, इनके मूल शब्द बताओ—

बैठक, सम्मानन, भीतिर, जामानो, करवाडी ।

न भक्त कर्मों में । मुक्त करो—

पैठक, छान, बरु, महोदय, नाथ, उपाधि ।

जैसे चतुर्वेद का वाक्य-विरलेषण करो ।

रत्न के अपने ज्ञानकारों में क्या सम्मान प्राप्त हुआ है ?

द शान्त आदि का भावार्थ समझना ।

जैसे प्रकृत ज्ञान आविष्कारकों का हाल बताना ।

आशुतोष आदि का परिचय देना ।



धगोर्चा, ग्रेने) आदि में परियों के समान नाचती और हमें आनन्द देती हैं, इसी कारण कुछ जीवों से बची रहती हैं।

अनेक जात किमी न किसी प्रकार हिंसक जीवों से बचती रक्षा करने में समर्थ हो जाते हैं; पर इस पाठ में केवल उन कीड़ी के बचने करने का प्रयत्न किया जायगा, जो स्वो रचकर भयवा अभिनय करके शत्रुओं की आँख में धूँ भाकते और अपना काम चलाते हैं।

अनेक प्राणियों के देहमें में आया होगा कि कंपल ना का कीड़ा, किमी का हाथ लगते ही, अपने शरीर को गुड़ गुड़ा कर गालरूप बन जाता है। इसी प्रकार जिंजाई नाम का लाल कीड़ा, जो घरसात के आरंभ में दिखाई देता है, मर का सकने पाते ही गुड़गुड़ा हो निरचल हो जाता है। इसका अभिप्राय क्या है? एक तो यह कि उस रूप में शरीर के कामन अंग नाचे टाकर टानि से बचते हैं और दूसरे यह कि उसे निरचल देस शत्रु यह समझकर कि वह मर गया है अगका पाछा छोड़ देता है।

एक दाननुमा कीड़ा होता है। उसकी आँखाओं और भं तारीफ करने का नायक है। जब वह किसी पत्ते या डाल पर बैठे तो उस समय क ३ डैगली भर उठावे, उस वह तुरंत सिक्कि का और दान का रूप धारण करके इस प्रकार से नोचे गिर जाता है, तनी का ३ डैगली भर उठावे, तनी पर गिरने से वह

घास-प्यास का आश्रय ले इस धूर्तता से छिप जाता है कि उन्को पता लगना प्रायः असंभव ही हो जाता है। ये तीनों प्रकार के कीड़े मकारों नहीं करते तो क्या करते हैं !

श्रुतु के अनुसार, अपने रंग बदल कर, घास-मृग आदि में छिप जानेवाले कीड़ों को बहुरूपिये कीड़े कह सकते हैं। गिरगिट में यह शक्ति होती है कि जिस स्थान में जा बैठता है वही स्थान के रंग की झलक अपने शरीर में ले आता है। इतनी जल्दी अपने रंग में परिवर्तन करने की शक्ति टिहूडे में यद्यपि नहीं है, परंतु वह भी श्रुतु के अनुसार भेस बदल लेता है।

घरसात में जब चारों ओर हरियाली रहती है तब उसका रंग भी हरा रहता है। कार्तिक मास में यह पक्षी घास का रंग लेने लगता है, और जब चैत्र, वैशाख में हरियाली तथा घास बिलकुल नहीं रहती तब वह बहुरूपिया मटिया रंग का हो जाता है। इस प्रकार रंग बदलने से उसका यह फायदा होता है कि वह अपने को बिना प्रयास छिपा सकता है और अपना जाति क शत्रुओं से बच सकता है। उनके पंख भी इस प्रकार के पंख रहते हैं मानो दा हर कोपल डाल से हान में ही निकले ही और घास तक कह लोकर फैले न ही। जब वह वर्षा-श्रुतु में डाल पर बैठता है उस समय उसे पहचान लेना बड़ा काम होता है। दूर से देखने में तो धोखा होता ही है।

क समय हमें हरे रंग की एक इल्ली नीचू के पंख के एक पर पर इन रंगों से बैठी हुई नज़र आई कि

इतनी का अभिनय से इतना प्रवाद देना हमें बहुत विस्मय हुआ, पर उनके साथ यह विचार भी आया कि यदि वह अभिनय से इतनी कुशल न हासों, तो इतने दिना तक सब लोगों को आसो से धुल झोक कर करना पड़े क्यों कर भगती ? तलाश करने पर ज्ञात हुआ कि वह नारंगी के पेट पर बैठनेवाली किलमी जाति की एक इल्ली थी। नारंगी कैंकि नाइल का ही जाति का पेट है इसी कारण वह वहाँ पहुँच गई।

एक हमारे दिन हमें हमसे भी इतकर और यह विचार आया कि यह देखने को मिलता। एक पेट को एक हाथ से धारण करके और कुछ मूत्रों के एक बहने-भो होने विचारों से यह हमारे मन में यह इन सब कि वह इतनी गई। इनका अनुभव करने के लिये वही ही था कि जो ही हिंसना बहा ही ही एक कोड़ा एक ही पेट पर गड़ा। जब तक वह कोड़ा पेट पर बैठा था तब ही तोम हास रहा कि बड़े बहनी है, उच्च पेट को हासों से बंध गला या ही।

१- इसकी की मीठी-मीठी मसाले का दूध में मिला कर खा
 लें।

२- इसकी बकरी के दूध को लें। मसाले लगे हुए दूध में
 खा लें।

इस दूध, मसाले का दूध, दूध, दूध, दूध, दूध,
 दूध, दूध, दूध, दूध, दूध, दूध।

३- मीठी-मीठी का दूध या दूध में मिला कर खा लें।

४- मीठी-मीठी का दूध या दूध में मिला कर खा लें।

मसाले का दूध, दूध, दूध, दूध,
 दूध, दूध, दूध, दूध।

५- दूध या दूध का दूध या दूध का दूध या दूध का दूध
 खा लें।

मसाले का दूध, दूध, दूध, दूध,
 दूध, दूध, दूध, दूध।

६- दूध या दूध का दूध या दूध का दूध या दूध का दूध
 खा लें।

मसाले-

१- दूध या दूध का दूध या दूध का दूध या दूध का दूध
 खा लें।

२- दूध या दूध का दूध या दूध का दूध या दूध का दूध
 खा लें।

(१५) मच्छी मित्रता

यूनान देश में पिथागोरस नाम का एक प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान था गया है, उसकी शिक्षा के स्वीकार करनेवाले का यूनान सभ्यता का प्राचीन काल में उग देश में प्रचलित हो गया था। पिथागोरस के अनुयायी लोगों के मित्रता प्रसंग इसमें भी अनुसरणीय हैं। म्यूनसिया इन मित्रताओं का प्रसंग यह था — "गणितिक गणना (गिनादि) का, गिनादि का अर्थ का समन का, या कुछ बड़ा सहनी चहुं दिने में या मानक इस महान का कि इस प्रकार के गिनादि-निष्पत्ति प्रभावों के निकट पहुँचना महान होगा, म्यून गिनादि-निष्पत्ति का अर्थ का समन है, कुर्कियों को समन में ही गिनादि ही प्रभावों में गिनादि होगा है, तथा गिनादि का ही का निष्पत्ति हाक समन उक्त दार्शनिक महान है।

इस मंत्र का अर्थ करनेवाले का मित्रता प्रसंग में यह है कि गिनादि का अर्थ का समन उक्त दार्शनिक महान है।

ने एक प्रकार की अद्भुत संवत्सरा और कृता भी थी।
 पहले तो वह एक साधारण लेखक का कार्य करता था फिर
 अपने लेखनों को ही तबवार हाथ में उठाई। सिपाहों घन, क्रमशः
 जते करके वह सेनापति बन गया और कार्यज (अफ़ाका
 महाद्वेष में एक प्राचीन समृद्ध नगर था) निवासियों के साथ
 मन में विजय होने के कारण उसका प्रभाव इतना अधिक
 बढ़ गया कि वह सिराक्यूज़ के राजसिंहासन का अनायास
 ही अधिकारी बन बैठा। अब डायोनीशियस के बल, प्रताप और
 एवं आदि का ठिकाना ही न रहा। गाम्बानो तुलसीदास जो
 ने बहुत ठोकरें कहा हैं—

नहिं कोट अत जनमा जग नार्हो ।

प्रभुता पाइ जाहि भद नार्हो ॥

यद्यपि यह राजा विद्वान्, विचारशील और चतुर था, तथापि
 उसको दृग्ग के अनुसार उसका स्वभाव क्रूर और अविश्वाली
 होगा था। इन्होंने अपने राज्य में एक ऐसा कारागार बनवाया
 था जहाँ से वह कैदियों के पारस्परिक वार्तालाप को गुन रीति
 से सुन सकता था। राजा को धार से उसे इतना अविश्वाम
 था कि इन्होंने अपने शयनागार के चारों ओर चौड़ा लोहे
 लुढ़का रक्खा था और लोहे पर क लुन के स्वयं अपने हाथ
 में प्रतिदिन लेखना और रद करना था। इन्होंने लोहे के
 एक अक्षि से यह इच्छा व्यक्त की थी कि तुम एक ही दिन

दे दा । विथियम ने प्रायेण की कि उसे युनान देश में कुछ
 करने भूमिगत का बँटवारा करना है और अपने इष्ट-विषयों
 में मित्रता मा है, अतएव उसे देश में जाने की आज्ञा दी गई,
 विथियम ने नियत समय पर लौट आके फौसी पर अपने की
 प्रतिज्ञा भी की ।

हायानांगियम् का इसकी बात पर विभाम न हुआ और
 अपने समझा कि विथियम का प्राण-रूढ़ से अपने के रिश्ते
 यह एक बहाना-सा है । जब विथियम ने अपने मित्र-देश
 की राजा के समक्ष उपस्थित किया और हमन ने यह बात
 स्वीकार कर ली कि यदि नियत समय पर विथियम न लौटता
 तो वह स्वयं हमके सामने पर प्राण-रूढ़ भोगेगा तब राजा के
 बड़ा आश्चर्य हुआ । दोनों मित्रों के पारस्परिक व्यवहार की
 परीक्षा होने के विषय में राजा ने उनकी बात मान ली
 और विथियम को देश में जाने की आज्ञा दी ।

विथियम मित्रता द्वारा न बाहर युनान को चला गया
 और हमको अनुभावना में हमन पर राजा ने कहा कि
 यह सब प्रथा प्रमाण यह बात न जाय । हमन अपने
 क लक्ष्य के लिये । इ काल इतने ही और बड़ा हमन
 कि राजा ...
 कि विथियम ...

हायानोगियस् की आज्ञा के अनुसार लोगों ने डेमन के कार्य के प्रारंभ करने का प्रयत्न किया ही था कि इसी बीच में अत्यंत गीब्रता-पूर्वक विधियस यहाँ आ पहुँचा। उनके बातों का मूचना दे दो कि मैं निज अपराध के कारण एक दंड भागन के लिये उपस्थित होगया हूँ, डेमन का बात को लिये मत करो।

डेमन और विधियस ने परस्पर एक दूसरे को धमकी किया। विधियस का इस बात का दुर्ष था कि वह डेमन का साथ बचाने के लिये यथाममय उपस्थित होगया, परंतु उसे को इस बात का शोक हुआ कि क्यों विधियस यथाम उपस्थित होगया और उसे (डेमन को) मित्रता का परिपूर्वता दागदंड भागके न देने दिया। धन्य है ! सचो मित्रता ऐसी ही जानी है। जिसमें विद्यागारम-सारा विद्वान् दार्शनिकों के गताए मन्दाय में तेमा आत्मत्याग क्यों न देख पड़े।

सचो मित्र एक दूसरे की सहायता के लिये प्राद-रतन को कुछ भी नहीं समझते। परंतु जमी मित्रता कदा देव नहीं है। जहाँ सचो मित्रता धर्म है वहाँ सचो मित्रता ही रहता है। प्राद-रतन काय में और सब भी जमे अनूठ उदाहरण दर्ज नही है। सुदाराणम नरक क पाठका का विद्वान् दागा कि जमे सचो मित्रता का उदाहरण देने क संत नन्दराज का उदाहरण है। सचो मित्रता का उदाहरण देने क संत नन्दराज का उदाहरण है। सचो मित्रता का उदाहरण देने क संत नन्दराज का उदाहरण है। सचो मित्रता का उदाहरण देने क संत नन्दराज का उदाहरण है।

(१६) येनार का तार

युग्य में विज्ञानी का सर्वप्रथम आविष्कार इतनी में हुआ है। यह बात ईसा के जन्म से पूर्व की है। इस दौर में ही मदीयों वान गईं और विज्ञानी की शक्ति के कई नए रूप भी उद्घाटित किए गए। विज्ञानी की शक्ति से तार से रूप भेजना, गूढ़, राज-वश और नगर आदि आविष्कार हुए और कष्ट-कारणों का खत्मना आदि के किनारे ही लोगों योगी काम किए जाते हैं। पर दोनथा सदी के प्रारंभ में एक अविम्व शक्ति का आविष्कार हुआ है। यह विज्ञान के इसकी शक्ति का अनुभूत उपयोग है। आधुनिक विज्ञान इस आविष्कार ने विज्ञानयता को दृढ़ कर दी है। इसके अर्थों यह भी है कि विज्ञान इतनी में सर्वप्रथम विज्ञान की शक्ति आविष्कार हुई थी वहाँ इस नए आविष्कार का प्रयोग बन हुआ है। विज्ञानाचार्य मार्कनी की यह उद्घाटना है।

मार्कनी का यह उद्घाटना सदा के शेष भाग में, ईसा के पूर्व नामक एक तबिये विज्ञानयता में विज्ञानी की शक्ति के इस नए रूप का प्रयोग विज्ञानी की शक्ति के म उद्घाटना का प्रयोग है। इस उद्घाटना का प्रयोग विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है।

अधुनार्थ-वाही संघ से संयुक्त कर दिया जाता है। -
 मंडल में जो तद्धितगों वाहित होती रहती हैं वे संयुक्त
 के जात के संतु से टकराती हैं। उनके टकराते ही
 संघ उन्हें स्वांघ लेता है और मांकनिक भाषा के रूप
 रूपांतरित कर देता है। जो तार वायु वही बैठा रहता है
 उसे प्रचलित भाषा के रूप में लिख लेता है। यह लिख
 अद्भुत और आश्चर्य को बात है।

एक बार पक्षक मारने में जितना समय लगाता है उतने
 समय में अमेरिका में इंग्लैंड या ईग्लैंड से जापान तक एक
 पहुँच जाती है। अमेरिका या आस्ट्रेलिया में किसी किसी
 घटना के घटित होने के एक घंटे बाद ही विलारत के
 शारा में उसकी खबर छप जाती है। यह मनुष्य के बुद्धि-
 का ही प्रताप है। उसका प्रगणा से ये नीरव, जड़, ईग्लैंड
 सोहे के समझे तार-संतु रूपी अपने हाथ फैलाए हमारे
 विविधतर से खबर ला देते हैं।

वेतार-द्वारा खबर भेजने के लिए दो बातों की आवश्यकता
 होती है। पहले तो आकाश-मंडल के ईथर-मात में तद्धित
 पैदा करना और दूसरे उन तद्धितों के आघात को प्राप्त करने
 तद्धितार्थ पैदा करने के लिये बहुत-से नए उपायों के आविष्कार
 किए जाने पर भा हेनरी हार्डेन का आविष्कृत खुलिया अणु
 कारी संघ का ही उपयोग सर्वत्र हात में है। उसमें काँच के
 गुण हैं। यह बात अचर्य है कि अब उक्त मूल-संघ

र में संकृत और शक्तिशाली बना लिया गया है। हाईज
 १४१ में तो केवल उमें कुछ या बहुत तद्विपरंग दूर भेजने
 किने बनाया था। अब तो किसी वायर्स' स्टेशन में लगभग
 १५०० मील तक प्रवाहित होता है।

यस तो स्थल ही है, अंत ममुद्र के वचःस्थल पर तैरने-
 जहाजों में भी वेतार की विजली से देगी का हाल-चाल
 विविध रूप से पहुँचता है और जहाज के प्रेम में छप जाता
 । सबसे चाय पाने के माय ही यात्रियों का उसे अप्पार
 पढ़ने का नाभाग्य प्राप्त हा जाता है। आजकल कई जहाजों
 आटोमेटिक प्रेम हा गए हैं, जिनमें किसी भी सांकेतिक
 भा में भेजी गई सूचर अपने आप छप जाती है।

वेतार की विजली से सांकेतिक भाषा में सूचर भेजकर
 सुख आनंदित और विस्मित तो अवश्य हुआ, परंतु उसके
 स्वर का सश टिकाना ही न रहा जय उमने वेतार की विजली
 हातचाल करने की भी तैयारी की। अब पर बैठे कोई
 विविधारी, रेल-यात्री अथवा ममुद्र-यात्री अपने खां-पुत्रादि
 आलाप का सुख प्राप्त कर सकता है और इसके लिये बहुत
 य भी नहीं करना पड़ता है। साधारण गृहस्थ भी अपने
 में यह यंत्र लगा सकते हैं। इसके लिये कई विशेष स्थान
 या विशेष सामग्री की आवश्यकता नहा पडती।

शहर के मकानों में लगी १५ विजली की वला कवल

प्रकाश देने को ही सामर्थ्य नहीं रखती, शक्ति उसमें सन्निहित रहती है। बेतार के साधारण बिजली की बत्तों की तरह काँच के फ़ानूम बिजली के तार-संज्ञक लगे रहते हैं। वह फ़ानूम साधारण बिजली-बत्तों के फ़ानूम से कुछ बड़ा रहता है। इतना ही है कि उसके भीतर के तार-संज्ञक में घातुमा एक और टुकड़ा लगा रहता है। इसी बत्तों के भीतर में तद्विस्तृम्भ प्रवाहित होकर शब्द का दूर दूरी पर देती है।

तार और धातु-पत्र के संयोग से बिजली की बत्तों का भावार्थ्य रूपान्तर मानव-जाति की एक अद्भुत कौतिलि है। आकाश में बढ़ती हुई बिजली को आकर्षण करने के मार्कोनी के गगनचुम्बी हथों और सुदीर्घ तार-बुन्दों आवश्यकता नहीं जाती। केवल गोलाकार रूप में तारों का एक लकड़ा के संभे पर लटका देने से प्रवाहित होनेवाली बिजली को उस बिजली-बत्तों से बेतार का टेलीफोन चुपक के मरश खींच लेता है।

लकड़ा के संभे पर लटकते हुए गोलाकृति तारों के टेलीफोन का संबंध होना आवश्यक है। यदि वह बिजली बत्तों में समुक्त बेतार के टेलीफोन के साथ लकड़ा के संभे में लपेट हुए कुछ तार का समझ करके मोटर-गाड़ी में लगे

ए किया जाय वां सैर करवे हुए भी शहर की सुबरी
 एकी जा नकली है। लंदन क्रयवा न्यूयार्क के दहे यहे
 किंगे जिन्की डाक सदैव चारों तरफ से भावी रहवी
 काने मोहर में यह संघ लगवा लीवे है।

संघ-द्वारा सुहर के संघ में एक सौर नहापकार लिख
 गई। सलुट के किनारे से भास-पास कं जहाज़ों को इत
 के द्वारा यहाँ सनय भेजा जाता है और तदनुसार उनकी
 को लेके कर ली जावी है। जहाज़ों का तूफान भादि को
 सनय इनो संघ के द्वारा दे दा जावी है।

(सुनि मे)

—सकलर

पाठ-सहायक

सुनि मे—अरब, उद्भवना उर—अरब—उत्पत्ति, उरव,
 अरब, नाविक—(नौसेना से) अरब, विद्यार्थी—अरबी
 के अर्थ, अरब—अरब, सुलिय—अरबी, उद्भवना
 है—अरब अरबी, आरुव—अरुव हुआ।

अनुवात

सुनि के वार में क्या लखन है। इतक का अनुवात है।
 सुनि का लख वार को हुआ है इतक अनुवात को लख है।
 सुनि के वार का लख है। इतक का लख है।
 सुनि के लख की लख है।
 सुनि के लख के लख है।

(१७) तुलसी-रचना

१. रामार्जुन-संवाद

हे राम! यह सब कहकर, विष्णु ने लीला की।
हे राम! रामदास, राम, मैं तुम सब ही करीर ॥१॥
'तुलसी' गीतें बहुत हैं, तुम सबको सब ही कर।
बानीयन सब मैं ही, परिहर सबत बहोर ॥२॥
'तुलसी' गीतें सुनो सब, पूजा परति पर-रुत।
जि से मैं पाएन हजत, तब से मैं पण रहें ॥३॥
कवि, कवि, भद्र, गीत, की ली ली गीत में पात।
मैं ही परिहर तुलसी तुलसी सब मनाते ॥४॥
तुलसी हरपन-मरक ॥ १ ॥ बोल हवा 'तुलसी'
समस्त की गीतें ही ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तुलसी बाधा दिना ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
साष्टम सुष्टम तुलसी ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
'तुलसी' राममय ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सुष्टम भाव तुलसी ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रामा ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विष्णु ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दोहा नं० १, ८, ११, ११ ।

३ - दोहा नं० १, ५, ९ का सन्धिस्य भाषार्थ स्पष्ट करने -
 बनाया इनमें काव्य-संबंधी क्या विशेषता है ।

४ - शुद्ध शब्द बनाया -

सात, बरीदरा, रूखंदु, द्विप, कीरति ।

५ - क्या अर्थ है, मोदादरण शब्द करो -

अनु, अंश, अशा, समान, सामान, समान, लक्ष्मि, विपक्षि, किं

६ - वहाँ आधे हुए उतू शब्द पुनो छोड़ उनके स्थान पर ही
 शब्द प्रयुक्त करो ।

७ - वर्षाववाची शब्द लिखो -

नीर, पाहन, वेकिना, नेनन, आनन्द ।

८ - निम्न मश्र खर्वा में प्रयुक्त करो -

छोड़, लान, नील, कुल ।

९ - निम्न निम्न शब्द उभयगोत्रि लगाकर बाराहो छोड़ करके
 हुए प्रयुक्त करो -

सहज, मुग, कुल, वल, समान ।

१० - छोटी बला में करण मश्र करके प्रयुक्त करो -

विपक्ष, वारिद, म लो साय, लक्ष्मि, मेवत, दंग, ली

११ - दोहा दोहा में जोड़ हुए बहूत उमर है, छोड़ लो !

समान

१२ - दोहा दोहा में जोड़ हुए बहूत उमर है, छोड़ लो !

२—शिव-वरात

नगे सँवारन सकल सुर, बाहन विविध विमान ।

दाहिं मगुन मङ्गल सुभग, करिं अप्परा गान ॥

-सिबदि संभुगन करिं सिंगारा ।

जटा-मुकुट अहि-मौर सँवारा ॥

हुँदल-कंकन पहिरं घ्याला ।

तन विभूति पट केहरि छाला ॥

सनि ललाट, सुंदर सिर गंगा ।

नयन तीन, उपवीत-भुजंगा ॥

गरन कंठ, उर नर-सिर-माला ।

असिव घेप सिवधाम कुपाला ॥

फर तिरुल अरु ईवरु विराजा ।

चले विसभ चदि बाजहिं बाजा ॥

देखि सिबदिं सुर-तिय मुमुक्षार्ही ।

धर-लायक दुलहिन जग नार्ही ॥

पिण्ड, पिरंषि आदि सुरदाता ।

चदि चदि बाहन चले वरावा ॥

सुर-नमाज सत्र भांति धनूपा ।

नहिं वराव दूलह-अनुरूपा ॥

श्रीः—पिण्डु कहा अम विहनि तत्र, धानि सकल दिमिराज ।

विहग विहग होइ चनहु सय निः निः साद १ समाजा ॥

घाँ०—यह अनुहारि वरात न भाई ।

हैंसी करैदहु पर-पुर जाई ॥

विष्णु-यवन सुनि मुर मुमुकाने ।

निज निज सेन-महित विनगाने ॥

मन ही मन महेस मुमुकाहो ।

हरि के व्यंग यवन नहि जाहो ॥

अति प्रिय यवन सुनत प्रिय करे ।

भृंगहि प्रेरि सकल गन टेंगे ॥

सिव-अनुमामन सुनि सय छाए ।

अभु-पद-जलज सोस विन्द नार ॥

नाना श्रादन नाना योग्या ।

विदेंसें सिव-ममाज निज देया ॥

कोउ मुख-हीन विपुलमुख काहू ।

विनु पद-कर कोउ बहु-पद-शाहू ॥

विपुल नयन कोउ नयन-विहीना ।

रिष्ट-पुष्ट कोउ अति वन खीना ॥

छंद—नन म्यान कोउ अति पांन पावन कोउ अयावन गति ॥

मुखन करान्न कपाल कर मव मय सोनित ॥

अथ स्वान-मुघर-मृगान्न-मुख गन बंध अगनित ॥

बहु भिनिम त-विमाच जोगि-त्रमात वानन नहि ॥

मो०—नाथहिं गावहिं गीत, परम तंगी भूत मव ।

देखत अति विपरीत, शोचहिं यवन विविध विधि ॥

ची०—नगर निकट बराह सुनि आई ।
पुर खरभर सोभा अघिआई ॥

करि बनाव सष बाहन नाना ।
बन्ने लेन सादर अगवाना ॥

दिय हरषे सुर-मेन निहारी ।
हरिहिं देखि अति भय सुगारी ॥

मिय-ममाज जष देखन लागे ।
बिहरि बन्ने बाहन मय भाने ॥

धरि धारज तट्टे रट्टे मयाने ।
बालक सष लै जीव पताने ॥

गए भवन पूछहिं पितु-माता ।
कदहिं बचन मय-कूपित गाता ॥

कदिय कदा कदि जाइ न पाता ।
जम कर धारि किर्धो बरिभाता ॥

बर बेराह बरद अमवारा ।
व्याज-कपालविभूषण धारा ॥

हृद—हृद धार व्याज-कपाल भूषण नगन जटित अरु
भोग भूष-अन-पिमाच-जागिनि विकट सुख राखे
सो जियत रहिहिं बराह देखत पुन्य बहु हेरिअ
देखिहिं सो अमा-विवाह पर पर बाव अम कुरिअ

—मनुक्ति महेश-भमाज सव, जननि-जनक मुहुकादिं ।

बात बुझाए विविध विधि, निहर दाहु हर नादिं ॥

ग्य से)

—सोवत बुझावत

पाठ-महायिक

सोवत—सोवत, सोवत—सोवत, सोवत—सोवत
 विराय—बधा, बधा—बधा, अनुदा—अनुदा
 स, सोन—सधूल, विरान्त—बधा, बधा—बधा

अनुदा

—एक जी का सैदा मुंज जू बर नाही जूने ना है
 और हृदय मे क्या सोच है ?

—सोवत बधा के बंधे ना है ! सोवत को सोवत बधा
 बधा बधाओ ।

—सोवत बधा के सोवत मुंज के बधा के सोवत बधा के
 बधा बधा है ! सोवत !

—सोवत के बधा मुंज बधा ! सोवत के सोवत बधा के
 बधा बधा !

—सोवत मुंज के बधा बधा के सोवत बधा के सोवत बधा के
 सोवत के सोवत बधा

—सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के सोवत बधा के
 सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के

—सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के सोवत बधा के
 सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के

—सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के सोवत बधा के
 सोवत के सोवत बधा के सोवत बधा के

१.—वैनी क्रियाएँ हैं—व्याख्या कर इनके रूप लिखो—
सामान्य वर्णन, विधि और दूर्यनूत—

संज्ञाएँ, पराने, करीदह, केविदि ।

१०.—कैसी सजाएँ हैं विशेषताएँ लिखो—इनके विशेषण बताते
प्रयोग करो—

बनाव, जपुनारै, रगत, ममाज ।

११.—कौसी वरा का तुम भी महर वर्णन करो और विशेषी
में श्रुति के लिये भेजो ।

१२.—श्रु. न. २ को लड़ी खोजी में श्रुतिगत करो ।

संकेत—

१.—हम कविता को समझाकर रस का ज्ञान कराना ।

२.—व्यंग्य कथा है हमका परिचय देना ।

इसमें इनमें से 'हाँ' या 'नहीं' के लिये केवल निरुक्ति ही
 समझना है। इसके अतिरिक्त 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहे
 जा सकते हैं। वास्तविक रूप में इन प्रकार के शब्दों का
 प्रयोग कि जिसमें 'हाँ' का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।

वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग करना ही
 कि वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 जिसमें इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।

अथवा वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 कि किसी के हाँ का वास्तविक रूप में कोई वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।

किसी का हाँ का वास्तविक रूप में वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।
 वास्तविक रूप में इन शब्दों का प्रयोग ही वास्तविक रूप में है।

हिंसी की धर्मभङ्ग वाले मुनकर उनकी ही में ही निराशा
ना वापसूमी, और न्याय-संगत वाले मुनकर उनका धर्म
करना दुराग्रह है। लोगों को इन दोषों से बचना चाहिए।
वर्गीय कारोबार में दुराग्रह के मत का समर्थन करने वाले
उनकी प्रशंसा में दा-वार गठ्ठ कहने में वापसूमी का कुछ
साधारण रहना है, तथापि, इतनी 'वापसूमी' के बिना संक-
ष्य नीरस और अप्रिय भी हो जाता है।

इसी प्रकार अपने ही मत का समर्थन करने और दूसरे
के मत का खंडन करने में भी कुछ न कुछ दुराग्रह भराव
है, जो भी उनका दुराग्रह मध्य और गिरित समाज में फैला
है। हिंसी अनुभवित मध्य की अपकारण निराशा
गिरित का विरुद्ध है और परिनिर्दह को मध्य तथा हिंसी
एक बहुत अनादर की दृष्टि में देखते हैं।

विद्वानों के समाज में मत-वेद होने के अनेक कारण दृष्टि
होते हैं। इमाने से प्रचिंसी के मत के खंडन करने का धर्म
करने पर बहुत ही स्थिरापूर्वक समा-न्यायिता करने वाले को
खंडन करना चाहिए। खंडन भी ऐसी धुराई में किया जाना
है कि विरुद्ध मत-धर्म के धर्म न लगे। बात-सोच में बात के धर्मों
का खंडन करना और धर्म-धर्म न हो। मकं हो हम धर्म
और ही कारण कारण धर्म के धर्मों का धर्म धर्म में
धर्म धर्म का धर्म म धर्म-धर्म धर्म के धर्म-धर्म धर्म
धर्म धर्म म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म

(१६) लक्ष्य

युवा पुरुषों को चाहिए कि संसार-क्षेत्र में प्रवेश करने के पहले वे अपने चित्त में सोचें कि हमारा जीवन का लक्ष्य क्या है ? हम क्या पुथा चाहते हैं और उसके लिये हमें पास क्या क्या सामग्रियाँ उकड़नी हैं ? तथा जिस संसार-क्षेत्र में जीवन-युद्ध के लिये हम भागे बढ़ते हैं उसके लिये हम कहीं तक सुसज्जित हैं ।

सैनिकों को यह रीति है कि युद्ध में जाने के पहले वे अपने करने के नियमों का भली भाँति साँख लेते हैं, और जो युद्ध करने जाते हैं वही ही वही उनके साथ, तेज और विपुल की शक्ति हाता जाता है । अंत में वे युद्ध-विद्या में ऐसे निपुण हो जाते हैं कि फिर उन्हें शत्रुओं से हारने की विशेष संभावना नहीं रहती । संसार-क्षेत्र में जीवन-युद्ध के लिये जो विद्यार्थी रूपी सैन्यदल को पाठगानाओं, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षाएँ दी जाती हैं, उनकी आवश्यकता भी ठीक इसी प्रकार की है । इन्होंने संसार में प्रवेश करने के पहले सभी को धर्म, यत्न, साहस और शक्ति की परीक्षा कर लेनी चाहिए ।

इस प्रकार शरीर का अत्यन्त परीक्षण करने के बादमें जीवित होकर ही गिर कर लेना उचित है। अतः हमें कि जिस जीव को हम स्वयं करने चाहें उसे तब ही देना है क्योंकि जीवों के जीवन का अन्तम अर्थ ही हीर होता है, वह कदापि मरने के लिए नहीं होता मरणा। फिर स्वयं के गिरने पर हमको हीर धारण करने के लिये सदापर यत्न करना चाहिए और तब तक वह स्वयं प्राप्त न हो तब तक किन्हीं कारणों में भी पड़े न रहना चाहिए।

जैसे मनुष्य के लिये जिसने संसार-क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया, वैसे जीवित भर के लिये एक लक्ष्य का गिर कर लेना ही स्वयं-हीर वास्तव नहीं है, किन्तु यह स्वयं अपने काम का है। इसके लिये संसार-क्षेत्र में प्रवेश करने पर मनुष्य पद पद परीक्षा हीर दुःख भोगना है। मैंकड़ों मनुष्य अपने जीवन के लिये कोई भी लक्ष्य गिर न करके, जो उन्हें सामान्य दिग्दर्शक है उसी को लेकर, संसार-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। कुछ लोगों के लिये यह उन्हें बड़ा भारी अज्ञान नहीं लगना तब अन्त में छोड़ कर किम्पों दुःख पर चलने लगते हैं, गौड़े दिनों के लिये उन्हें गौ दिग्दर्शक पद मान कर तीमरं पर चल निकलते हैं। जो हीर वे धार धार अपने जीवन के लक्ष्य को बदलने चले जाते हैं और लाभ के बदलने हानि ही उठाते हैं। निदान इसी प्रकार की बदला-बदली में उनके जीवन का मध्यम अज्ञान हीर—सुधावस्था—भी बात जाता है। अंत में जब वे देवते

है कि इसी अन्त-काल में मेरी सुधावस्था के बत, साइन और
 नज मभा नष्ट हो गए, तब घट के पथरा कर किमी १६ १६
 क अधिक बन जाने हैं और जहाँ तक बन पड़ता है वह
 है। कि कुछ ही दूर पहुँचने पहुँचने उन्हें सुधावा मा
 है और किमी कार्य के करने में शरणा हो जाने हैं।

इसी विषय घुंड़मान श्रीग चन्द्र-निमशात्रे मनुष्यों
 कामों की तुलना लडकों के क्षेत्रों के साथ करती है।
 बालक निन्दन नष्ट गिरानों को देखकर पुराना हो का
 नहीं करत, बार बार जावन के लक्ष्य को बदलनेवाले
 भी होकर इसी प्रकार करत है, और मनुष्यों के सुध-रूप
 विचार न कर इनकी बाहरी समक-दमक ही पर सुध
 सुमा जात है। इसविषय पहल जावन के किमी एक
 विचार कि बिना ही इस पथ में चलने में बड़े बड़े
 संभावना जानी है क्योंकि मनुष्यों के जीवन का
 समुदाय समस्त अर्थों की चेष्टा में जाता है और
 मनुष्य के जीवन परभाव हो जाने वाला है। कि
 विषय में शान्ति से कहा कहा है—

“जो मनुष्य अपने कामों का सही धारि में जाति
 जाति है, निरवय है कि वे हमें उच्च सीमा में जाते
 जाते हैं, क्योंकि सही धारि में कार्य का धारि का
 जाति हमें उच्च सीमा में जाते हैं।”

१. यह, जो कि यह धारि में जाति हो जाने का है।

कामों के मरना प्रमादित हो गे हैं । जिसमें ही से न बिना,
 कामों के मरना और वह के मरने भा नौभाग्य-कर्मों की दृष्टि में
 कामों के मरने संसारो जीवन केने आरंभ करना होता है
 कामों के मरने । यह है 'आज' कर्मों कामों का आरंभ दुःख-
 कामों के मरने है किनी काम को एक बार आरंभ करके और कुछ
 कामों के मरने से उत्तरो में लगे रहने से मरना काम ही उत्तरो को
 कामों के मरने है और जो मरने उन कार्य को शक्ति होती
 कामों के मरने ही त्यों दिव का भा आनंद प्राप्त होता जाता है ।
 कामों के मरने के आरंभ ही को देखकर उन काम के करने-
 कामों के मरने को चमत्कारी और सहन-शीलता विदित हा
 कामों के मरने । तैसी वह हम लोग किसी हरेली को वाद । चाहते
 कामों के मरने उनको पहली ही उदाहरण है उनको को उन
 कामों के मरने ननुन मासों हैं, क्योंकि पहली ही के उदाहरण
 कामों के मरने का उदाहरण लेना महत्त्व का जाता है । उनको
 कामों के मरने कामों से आरंभ करना करने पड़े यह काम
 कामों के मरने हैं, किं पहले ही पड़े का ननुन मासों के
 कामों के मरने पर करने का उदाहरण का ननुन मासों के
 कामों के मरने गिरेगा, और कामों के मरने का उदाहरण
 कामों के मरने । बिना नौदों को मासों पर पड़े कामों के मरने
 कामों के मरने नहीं बह सकता । उदाहरण ऐसा के
 कामों के मरने छोटे छोटे कामों के बिना किए एक कामों के
 कामों के मरने में समर्थ हो ।

कार्य-मात्र ही उच्च है, परंतु यदि हमका करनेवाला साधु और सुचरित हो तो कोई काम भी नीच या अपमान देनेवाला नहीं हो सकता। किंतु वह यदि असाधु वा कुचरित हो तो चाहे कैसे ही भले काम का क्यों न आरंभ करे, दुर्गंत ही उस काम का फलफित करके भाग भी अपमानित और लज्जित हो जाता है। यही कारण है कि सामान्य कामों से भी बड़ों की बड़ाई और बड़े कामों से भी नौचों की नौचाई एकट हो जाती है, क्योंकि निज चरित्र से ही मनुष्य अपने किए हुए कामों को बनाता, वा बिगाड़ता है।

पृथ्वी में सभी लोग बड़े हुआ चाहते हैं, किंतु वैसे बड़े काम कोई बिरले ही करते हैं। यम इमो से वे मंत्र उन्नत नहीं हो सकते। अतएव, भाई! यदि तुम उन्नत हुआ चाहते हो तो सेमार-शेः के द्वार पर लड़े होकर विभारा कि तुम्हारा बिल किस घोर भुक्तता है। धर्म, उमा के अनुसार अपना एक लक्ष्य स्थिर करके लगातार काम करने रज। विश्राम, पैरे और अपनी मारी गति में उम काम क करने का यत्र को फिर ना तुम्हें भाव हो उम क रं क उन्नति का देखकर अपना रच होगा, तुम मुम्हो जग और उम उम काम का पिना किण कदापि भ्रमभाव न पड़े मक ।

यस्येव भाग मुम्ह बहकावना क उम उम काय के योग्य नहीं हो किंतु उम उन्नत कहने पर काम न करके अपना मिथ्या के

क्यों कोई भी चीज ही कभीस काम करने से हो, परिश्रम से
 काम करने से एक से एक दिन बह निकल ही हो
 सके। यदि कोई काम कठिन या दुस्तुदाई हो तो भी अथवा
 कर्मयोग और उसके आनन्दकृत पर आनन्द लेकर तुम उसे
 ही छोड़ और ईश से करो कि जिससे लम्बे पुरा पुरा दुःख
 मिले। अपने कामों को योग्य कार्य यदि दुस्तुदाई भी हो तो भी
 कि उसे दुस्तुदाई मानकर कर ही जाना। हा इस विषय में
 कि तुम ही याचनात रही कि अथवा अन्तिम संस्कार भाग ही
 जो इतने में अविमान से न फुल जाना बदन सदैव एक हीर
 परामर्श रह कर अपने कामों को करो। इस विषय में
 भी निदान का उपदेश है कि—

“अथने स्वभाव को भाष हीन परदेश को अकथनाय करो,
 क्योंकि ऐसा करने से दुःख भाष हीन प्रजात-इत्यथ होंगे। देवों
 कापि निराशा न हो, क्योंकि जो मनुष्य आकाश में लक्ष्म
 काके अथवा को लान छोड़ता है अथवा तीर दृष्टा को अथ भाग को
 अथ मयांथालो अथि के लार से अथिक ही नैया जाता है।”
 अथ ही, जो मनुष्य अन्तिम के अथ अथि पर अथुगे को
 लिये लान-मान से अथ अथि ही लार पुरी अथ अथका
 अथ अथक अथ लान लान लान अथ अथक अथ अथक अथ
 अथ अथ है, अथिक अथ अथ अथि का अथि लौक
 अथ अथ है अथकी अथि अथ अथ अथक अथि अथ अथक
 अथ अथि है अथ अथ अथि अथ अथ अथ अथ अथक

हैं ? उनके विषय उनकी भाशाओं और उनके कार्य-सम-
 अन्तर्गत बड़े-बड़े नाम हैं और हमें ही मनुष्यों के धर्म-उप-
 मदा-दायक जोड़-पड़ाना है।

—अभिप्रेत

पाठ-सहायक

सत्य-सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग — परिवर्तन, देना, है
 शब्दसुम्भ ३ — इस प्रकार के अन्य सुम्भ में भी आनिए—(अन-
 नर्त - इय - अमद, अन्त-मन)

अभ्यास

- १—इस पाठ का भाषा कैसी है ?
- २—इस पाठ में जोड़े गले शब्द = १० हैं। उनके समभाववाले शब्द-सुम्भ या शब्द-लया।
- ३—अपने वाक्यों में प्रयुक्त उनके भाषा-स्यः करो—
 उग्रता सदा हाथ जोड़ें पड़ा रहनी है।
 लौभाग्र लक्ष्मी की दाष्ट में नहीं आते।
 वा-हेरा नमक-कमक पर सुग्ध हो शुभा जते है।
 जीवन-सुख के लिये आग बदन है।
- ४—इसका शीघ्र कथा हो सकता है, लेख का सार-संक्षेप क्या है ?
- ५—इस पाठ का सार-संक्षेप दो पृष्ठों में स्वरूप ले लिखा।
- ६—'चर्चा-विषय' की सुझना किनसे किस प्रकार की गई है ?
- ७—जीवन के सत्य में क्या तात्पर्य है ? उसकी जीवन में
 धारण-रचना है।
- ८—'प्रयोग' एक सार्थ बनाकर प्रयुक्त करो—
 प्रवेश, क्षेत्र, शत्रु, परीक्षा, जीवन-संरचना।
- ९—प्रथम अनुच्छेद की व्याख्या शीघ्र वाक्य-विमर्श करो।

के विन्न भिन्न भागों के लोग पढ़ने के लिये जाने लगे कुछ कुछ प्रचार अन्य विषयों का भी था जैसे गणित, वैद्यक आदि और कुछ दिनों में डब-डब द्वारा पारवत्य विद्या की भी प्रथा होने लगी थी। अतः विक्रम मत्स्य नहीं है कि पश्चात् ही सर्व से पहले ही पारवत्य विद्याएँ सीखने लगे हैं। इनसे पहले ही हीन भाषा की जा पुनर्वा जापान देश में ली गई लगे जापानी लोग बड़े बाब तथा परिश्रम में पढ़ते थे। इनके मनो इनका अनुवाद भी जापानी भाषा या चीनी भाषा में करते थे।

सन् १८६८ ई० में जापान देश में कई जापानि हुई। इनके अन्तर्गत अतिशय सफलता को दे दिया। इस प्रकार जापान के मन्त्र सन्देशर स्थापित किया गया, और देश का विकास करने लगे। सन् १८७३ ई० में जापान की सन्देशर लेई हो गई। पूर्णतः जापान बड़ा देश। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया।

इस राज का भी अतिशय सफलता को दे दिया। इस प्रकार जापान के मन्त्र सन्देशर स्थापित किया गया, और देश का विकास करने लगे। सन् १८७३ ई० में जापान की सन्देशर लेई हो गई। पूर्णतः जापान बड़ा देश। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया। सन् १८७३ ई० में एक राजा का शासन कर दिया।

विजय छंद

भगद

पेट चढ़्यो पलना पत्रिका चढ़ि पात्रकिहू चढ़ि मोह मढ़्योरे ॥
 चौक चढ़्यो चित्रमारा चढ़्यो गज-श्यामि चढ़्यो गढ़ गर्व चढ़्योरे ॥
 श्याम प्रिमान चढ़्योई रघी कदि 'कंसव' सो कवहुँ न पढ़्योरे ॥
 पंचन नादिं रघी चढ़ि चित्त सो चादव मूढ़ पिताहू चढ़्योरे ॥२१॥

भुङ्गगत्रयाव छंद

रावण—निकार्यो जु भैया लियो राज जाको ।
 दियो फादि कै जू कहा श्रास ताको ॥
 लिए धानरालो, कहीं बात तो सो ।
 सो कैसे लरै राम संप्राम मोमी ॥२२॥

विजय छंद

भगद

हाथी न साथी न घोरं न चेरं न गाँव न ठाँव को ठाँव विर^१
 तात न मात न पुत्र न मित्र न चित्त न तीर्थ कहूँ संग रहै
 'कंसव' काम का राम चिमारन और निकाम न कामदिं ॥
 पन न चन चनी चित्त अरि अरु नारु अकंलाई जैदे ॥२३॥

भुङ्गगत्रयाव छंद

भगद

है ना जाय अनाय ना नर न नरु नरु कहि रघ्यादि
 परदाहू नोली न दारि नो को, नु कम नर वध कन्हें जती को

मालविका की वही है एक दिन या एक आदमी को जान का
संबंधी है।

मालविका जब तक मालिका को देखे जान, उन्ही काल
मालिका मालविका को हर प्रत्यक्षित रहता वह वेश
मालिका को पहचाने है। मालिका को हर एक किसे जलोप्य मालिका
मालिका को मालिका सुन बोध को मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका है। मालिका मालिका मालिका को मालिका किमान, कुली,
मालिका मालिका मालिका को मालिका मालिका मालिका
मालिका, मालिका मालिका मालिका कि प्र उन्ही मालिका को मालिका
मालिका मालिका है।

एक ही एक मालिका को मालिका को मालिका मालिका मालिका को
मालिका, मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका
मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका

मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका

मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका मालिका

(२७) वर्तमान हिंदी-साहित्य के गुण-दोष

वर्तमान साहित्य प्राचीन काव्य से तीन परम प्रधान बातों में भिन्न है, अर्थात् खड़ा बोली के प्रचार, गद्य-गौरव और लोकोपयोगी विषय-समाचार में। ये तीनों बातें वर्तमान साहित्य को खूब ही गौरवान्वित करती हैं। लोकोपकारी विषयों को आदर देनेवाली नवीन प्रथा का स्थिर हो जाना तो एक बहुत ही बड़ा सम्पादन-कार्य है। जैसी देश-दशा होगा, वैसी ही कविता भी स्वभावतः होगी। प्राचीन काल में जीवन-दोष की निर्यन्ता में लोकोपकारी विषयों की आदर तुम्हारे कविजनों का विशेषतया ध्यान नहीं गया, यद्यपि यह मर्दान्य ध्यान में रचना चाहिए कि अन्य बातों में उन्होंने साहित्य-भारिमा पूर्णता को पढ़ा है।

इस समय अश्रावक दल के ललका की रचनाये विशेषतया इन्हीं विषयों में भरी रचना हैं, यद्यपि अजभाषा के अनेकानेक कवित्त अत्र लक्ष्य जायते तथा पर हा खलनी है। इस समय का साहित्य अनेक प्रकार का गद्य-गौरव अधिक है। किन्तु इनके अन्तर्गत अनेक प्रकार के दोष हैं। नवीन प्रथानुयायी कविता के अन्तर्गत अनेक प्रकार के दोष हैं। इन बातों का उचित ध्यान में रखा जाना आवश्यक है।

होते हैं। इन लोगों के कारण बहुतेरे लोग पुराने अशुद्ध विचार से दृष्टि के ध्यान पर धीरे धीरे हो जाते हैं। यह दास पक्ष-प्रथा का तो नहीं, याम् आजकल के हमारे मानसिक अव्यवस्था का ही प्रकट करती है।

भाषा में उन्नति करने करते अथ अष्टा रूप प्रदण कर लिया है, परंतु फिर भी हममें एक दोष यह है कि अब तक हमन भाषा के लिखने में लोग संस्कृत-भाषा के कठिन शब्दों का लिखना ही अल्पम् ममभते हैं, और ऐसे शब्दों के लिखने का प्रयत्न नहीं करते जैसे अंगरेजों के बड़े-बड़े लेखक लिखते हैं और बहुत दिनों से लिखते आए हैं। अब तक गद्य में दर्शन, रमायन, विज्ञान, कारबार आदि के अर्थ विशेषता से बने हैं, परंतु साहित्य-संबंधी ऐसे गद्य-प्रथ बहुत ही कम देखे जाते हैं। गद्य में अर्थकारों, रसों, प्रथभ्रान्तियों तथा अन्वय काव्यादि का लाकर इसे उत्कृष्ट एवं कठिन बनाने का अभी पूरा क्या प्रायः कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है। आशा है कि इस ओर भी हमारे लेखकगण ध्यान देंगे।

अब तक हमारे लेखकों ने भाषा के गूढ़ाकरण में संस्कृत-शब्द का लेना ही आवश्यक जान रक्खा है, परंतु इन शब्दों पर सदैव ध्यान रखना चाहिए कि अन्य भाषाश्रय किसी भाषा का उदा नहीं बना सकता। संस्कृत और भाषा में बहुत दिनों से सर्वत्र अवगत बना आता है, परंतु इसकी वृद्धि भाषा-गौरव वर्द्धित करने नहीं हो सकती। जैसे मनुष्यों के लिये

संस्कृत का एक आवश्यक गुण है, वैसे ही वह भाषाओं में से नहीं है। किंतु आजकल के लेखक इस अनुपम गुण को पर भाषा को संस्कृत की संवकिनी बनाना चाहते हैं।

हमारे भाषा की श्रुतिमधुरता इनका एक प्रधान महिमा संस्कृत में मिलित बर्णों के प्राधिक्य में पुराने साधारण श्रुति-रुद्र दोष बहुत कम माना है, परंतु हमारे भाषा में जो काल में साधारण एवं कवियों में मिलित बर्णों को मिले बहुत ही कम जाने दिया है और बहुत-से ऐसे गच्छों श्रुति-रुद्र माना है। इस कारण प्राधान रचनाओं में जो का ऐसा अभाव है कि अन्य भाषा-वेत्ता लोग यदि हमारे भाषा को पढ़ा भा कहते हैं तो वे भी उनके नाशुर्ष की तो अस्वीकार कर देते हैं।

हमारे दोषों के कवियों में आजकल इस अनुपम गुण का जो अभाव है वह विस्मय कर देता है। एक तो हमारे कवियों में जो काल में साधारण एवं कवियों में मिलित बर्णों को मिले बहुत ही कम जाने दिया है और बहुत-से ऐसे गच्छों श्रुति-रुद्र माना है। इस कारण प्राधान रचनाओं में जो का ऐसा अभाव है कि अन्य भाषा-वेत्ता लोग यदि हमारे भाषा को पढ़ा भा कहते हैं तो वे भी उनके नाशुर्ष की तो अस्वीकार कर देते हैं।

हमारे दोषों के कवियों में आजकल इस अनुपम गुण का जो अभाव है वह विस्मय कर देता है। एक तो हमारे कवियों में जो काल में साधारण एवं कवियों में मिलित बर्णों को मिले बहुत ही कम जाने दिया है और बहुत-से ऐसे गच्छों श्रुति-रुद्र माना है। इस कारण प्राधान रचनाओं में जो का ऐसा अभाव है कि अन्य भाषा-वेत्ता लोग यदि हमारे भाषा को पढ़ा भा कहते हैं तो वे भी उनके नाशुर्ष की तो अस्वीकार कर देते हैं।

तक क संघों को पुराने, समय-प्रतिकूल और भद्देसिन मजमूने हैं। आजकल की पद्य-रचनाओं में शास्त्राचक्रमय सुप्रबंधभाव के बड़े ही विकट दृश्य आ जाते हैं।

शास्त्राचक्रमय कवियों का एक शाखा से दूसरी शाखा पर बार-बार कूदने के समान रचना करने को कहते हैं। किम्वं भाव को लेकर उसे कुछ दूर तक चलाना चाहिए और उसके संबंधा भावों एवं उपभाषाओं को उसके समीप स्थान देना चाहिए, जिससे रस की पूर्ति हो, न यह कि एक भाव का कथन-मात्र करके दूसरे पर कूद जाना। यदि मूर्ख की फिरछों का वर्णन उठावे तो उनकी मालाओं, संख्या-वाहुल्य, तेज, नेत्रों के चक्र-चौंध करने का बल, कमल खिलाना, ससार में वृद्धता के हास या वृद्धि से श्रुतियों का बदलना, फलों का पकाना, रसों का उत्पन्न करना, संसार की जीवन-वृद्धि करना आदि अनेकानेक गुणों में से कुछ भी कहे बिना दूसरे भाव पर चढ़ से कूद जाना साहित्य-शक्तिहीनता का ही प्रमाण देगा।

सुप्रबंध गुण वर्णन-पूर्णता में ही आता है। जिस को उठावे उसका सांगोपांग कथन करना एक अन्धा प्रदर्शक है। यदि किसी में बहुत ऊँचे-ऊँचे के लाने का बल न हो तो केवल सु-बंध से माना जायगा। आजकल बहुधा लोग न तो ऊँचे लाने हैं और न सुप्रबंध को अगर ही कुछ ध्यान देते। सुखर काव्य आचार्य का निरादर एवं

ये दावों बातें चित्तकुल भगुद्ध हैं, ऐसा प्रकट है और मभा मानने हैं, यहाँ तक कि उपर्युक्त प्रकार के लेखक भी बचनढांग यही कहने और समझने हैं। वे इमों कथनानुसार चलते भा हैं, परंतु बाल्य में उनके आचरण उनको उपर्युक्त दो विभागों में से एक में हाल देने हैं। ये अपने आपको मूले हुए हैं, और यही तक भुले हुए हैं कि पराये विभागों एवं मिथ्याता को स्वाम धरने ही न केंचन कहने, बरन समझने लगे हैं। इस प्रचंड मानसिक गग (स्वभाव) का निराकरण तथा हो सकता है तब मनुष्य अपने इत्येक मत के कारणों पर सदैव विचार रखे और समझता रहे कि उन कारणों में से उनके कितने हैं।

यदि कोई शर्मस्थिर को नृनसोडाम में भा अंदर घनराने तो उसे समझता चाहिए कि उममें उन दावों के गुण-दोष समझने की पायना है या नहीं और उमने उनके समझने में पूरा धम नो किया है या नहीं ? यदि इन दावों उनां में से एक का भा उमर नहीं है तो उसे उपर्युक्त नृनाजन्य धान को अपना मत न समझ कर पराध का समझना चाहिए।

इमों यही गग के बार पाह हो दिना में हुआ है
 कन धम अनुबान का वनन मरभा १५ है कि म अने
 मने व १५ का मने १५ मने १५ मने १५

अतिरिक्त और कुछ लिखते ही नहीं और जिस ग्रंथ का वे स्वतंत्र कहते हैं, प्रायः उनमें भी औरों में चोरी और सीन-जोरी निकल आती है।

सारांश यह है कि आजकल गद्य की उन्नति तो हुई है, परंतु समुचित नहीं, नाटक-विभाग अभी होनाबख्शा में है, हौं पढ़ता हुआ देख पढ़ता है, पद्य की अवनति है और लेखकों में प्राचीन भारतीय अथवा नवीन पाश्चात्य प्रणालियों के अनुसरण में अंधपरंपरानुकरण का भारी दोष है।

—“अनभ्रंशु”

पाठ-सहायक

उद्गायक—(उत् + गाय) - उद्गायत्री, दिनोद्दिन—प्रतिदिन।
 इली प्रकार रातोरात। ककशाता - कड़वा, मांगीपांगी—(मङ्गलिका +
 अंग-उपमा) गङ्गा स्तुरण—दृष्टन निकलना, तुक—कविता के पद-
 ग्राह्य परों का अर्थ, प्रचुरता—आधिक्य, दीर्घाद्विष-उन्मत्त—दीर्घा-
 द्वेष से उत्पन्न इत्या प्रकार 'अद्विगलजन्म' आदि उन्मत्त शब्दों। पाश्चता—
 उन्मत्त अन्वय अंधपरंपरानुकरण का दोष होकर अन्वय को उन्मत्त
 करना

अभ्यास

१. उद्गायक का अर्थ क्या है? उद्गायत्री का क्या अर्थ है?

२. इली प्रकार रातोरात का अर्थ क्या है?

३. ककशाता का अर्थ क्या है? मांगीपांगी का अर्थ क्या है?

४. अंग-उपमा का अर्थ क्या है? उन्मत्त का अर्थ क्या है?

५. अंधपरंपरानुकरण का अर्थ क्या है? अन्वय का अर्थ क्या है?

६. पाश्चता का अर्थ क्या है?

६—भावार्थ लिखो और प्रयोग करो—

शास्त्राचक्रमण, अधरपरग, विचार-वदनयता, शक्ति, शूरस्य,
भुनि माधुर्य ।

७—शक्तिग्रह समान लिखो, और कथापरपकना साधि-विग्रह करो—

सागांगण, भाषा-संग-भंडार-भरण, शक्ति-विशिष्टिपल,
कवि-शक्ति-शूरस्य, उमाव-उदय, दिनोदिन ।

८—विरोधतायें प्रकट कर कथायथायों शब्द लिखो—

सुभागा, भदेमिल, मेरुमिनी, मोनाहोरी, दिनोदिन ।

९—इस गद्य से साहित्य रचना से मध्य स्तनेवाले उपदेशी निदान
या नियम निकालो ।

१०—वर्तमान लेखकों और कवियों के किन दोषों की ओर ध्यान दिया
गया है ?

संकेत—

१—भारतेंद्रु काहू का मूदम परिवर्त देना ।

२—गद्य विचार पर प्रकाश डालना ।

३—साहित्योपनि पर प्रकाश डालना ।

(२८) सूर-सुधा

(१)

राम कमल यंदौ ह बराई ।

जसो कृपा पगु गिरि लंपे, बंधे की मय बहनु दरमाई ॥

शहरो सुनै, मृक पुनि धालै, रक बले निर छत्र धराई ।

सूरदास' म्यामा बरनामय बार बार बदा ताहि पाई ॥

(२)

मोक्षम कोन कुटिल-बल-कामा ।

जिन तनु दिये ताहि बिसराय, ऐसे नानहरामो ॥

भरि भरि उदर विषय ता धाय, जैसे सूकर प्रामा ।

हरि-जन द्वाः हराम-वमुच्यन का निमिर्दान करत गुलामो ॥

पापो कान बड़ा है मंतै, मय पाततन में नामो ।

'सूर' पतिव का ठार कह, है सुनिए भर्षति म्यामा ॥

(३)

सुम मेर' शरण' लाज हरौ ।

सुम जन्म मय बतवजम करना कछु न करौ ॥

य मन्म मय धमरत नाह' बल 'जम बर' धरौ ।

सूरदास' म्यामा बरनामय बार बार बदा ताहि पाई ॥

—सूरदास' म्यामा बरनामय

मव प्रपच की पोट बांधि करि अपने मोस धरी ॥
 दाग, सुन, धन, मोह लिए ही सुधि बुधि, मव दिमरी ।
 'मूर पतिन को बेगि उधारी अब मरी नाव भरी ॥

(४)

तजौ मन हरि-विमुखन को संग ।
 जिनके संग कुबुधि उपजात है परत भजन में भंग ॥
 कडा होत पय पान कराए बिष नहि तजत भुजंग ।
 कानाहि कहा कपूर चुगाए स्वान नहाए रंग ॥
 रर को कहा अरगजा लेपन मरकट भुषन अंग ।
 गज का कहा नहाए सरिता बहुरि धरै रगिह अंग ॥
 पाहन पतिन वान नहि बेधत रीती करत निर्यंग ।
 'मूरदास' खन, कागे वामरि चढ़ै न दूजो रंग ॥

(५)

आजु हीं एक एक करि टगिरी ।
 कै हमरी, कै तुमरी माधर अपुन भोगे लरिहौ ॥
 हीं तो पतिन सात पांडिन को पतिन हे निर्मागहौ ।
 अब हीं ज्यारि नचन खाहत ही तुम्ह दिख दिनु करिहौ ॥
 कत अपारिण पग्लानि नमावत हा पायो-हरि हींग ।
 म 'प-न' व ना के उटि है नव राम उहो बाग ॥

(६)

मूर जगदीश्वर मूर नमो नम

हम अनन्य देह हम-नगर पागल मयि वान ॥

जै हर भाज्यौ चाहत ही ऊपर दुख्यौ सचान ।
 दुई भौति दुख भयौ ज्ञान यह योन उधारै प्रान ॥
 सुनिव ही अहि दस्यौ पाथी मर हृदैं संधान ।
 'सुदान' मर लख्यौ सधानां जय जय कृपानिधान ॥

(७)

धध ही मान्यौ बहुत गोपाल ।
 राम-केश कौ पहारि पोन्ना' पट रिपुर कौ माल ॥
 महा मोह व नूपुर बाजत निद्रा मर रमाल ।
 भयम भरो मन भयौ पद्मवज' चलत कुमरीति पाद ॥
 कृष्ण नाद करति पटभ्रंतिर नन विधि है काल ।
 माया बा बाटि पटा दांघा नाम तालव तयो भाल ॥
 बाटिष कल बाति, तिरकार उरुधर सुनि गी बाण ।
 'सुदान' को मरै शंकरा दूर करतु नदाल ॥

(८)

तेमि बह बरही सोदाव ।
 मगर-नाथ मगरिध-नाथ ही प्रम सुनिदर ॥
 बिम निराम परमम-वदरक मराल सारक मराल ।
 लालक मराल सुनिदर । मर हर करति-मराल ॥
 मर मर सुनिदर सुनिदर मर मराल मराल ॥
 मर सुनिदर-मराल मर मर सुनिदर मराल ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

(९)

कहावन ऐमे त्यागो-दानि ।

चारि पदारथ दये मुदामहिं अरु गुरु को सुन आनि ॥

राधन के दम मलक छेदे सर-हाति मारंगपाति ।

बाभोपण का लंका दोनो पूरष का पहिचानि ॥

मित्र सुदामा कियो अजाचरु प्रानि पुरातन जानि ।

'सूदाम' सो कह निदुगहिं नैननि हूँ को हानि ॥

(१०)

किनक दिन हरि-सुधिरत-विनु स्वाण ।

परनिहा-रम में रमना में अचने परत हवाण ॥

नेल लागाय कियो राबि मदन बर्याह मनि मनि धाण ।

निलक लागाय अने म्यामा वनि विपयानि के मुण्ड जाण ॥

काल बली ने मध अग कपल ब्रह्मादिक हूँ रोग ।

'मूर' अधम की कहा कान गनि उदर भरे परि गौण ॥

(११)

कोजै प्रभु अचने विरद की साज ।

महापतिन कबहुँ नहिं आयो नैकु नुसहारे काज ॥

माया मधम-धाम-धन-बानि ।

देखत सुनत मरे जानत हा नऊ न भाय वाज ॥

अदियत पतिन बहुत नुम नर मयननि मुन अवाज

दई न जान मार अगहिं काज न बदन ब्रह्माज ॥

लौंजै पार छत्तारि 'सूर' को महाराज ब्रजराज ।
नरै न करत कहसं प्रभु तुम सौं सदा गरीब-निवाज ॥

(१२)

जैसेहि राखी तैसेहि रहौं ।

जानत ही दुख-सुख सब जन कौ मुख करि कहा कहौं ॥
कबहुँक भाजन देत कृपा करि कबहुँक भूख सहौं ।
कबहुँक बड़ो सुरंग, महागज कबहुँक पार बहौं ॥
कमल-नयन मनस्थान मनोहर अनुचर भयी रहौं ।
'सूरदास' प्रभु भगत कृपानिधि तुम्हरे घरत गहौं ॥

(१३)

जो हम भलै-पुरं तो तेंरे ।

तुम्हें हमारी साज बढ़ाई दिनतो सुनि प्रभु मेरे ॥
सब तजि तुव-भरनागत बादी निजकर घरत गहं रे ।
तुव प्रताप-बल बढ़त न काहू निडर भये घर खेंरे ॥
घौर देब सब रंक भित्तारी त्यागें बहूत खेंरे ।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरी कृपा सें पाये सुख तु खेंरे ॥

(१४)

माय नु कर के सोहिं उदारी ।

पतितन मे दिग्गज पतित हौं रावन नाम तुम्हरी ॥
बड़े पतित-गहिन पासंगहु खलनि-वो हौं दुखिपागी ।
धारी नरक नाडे मेरो सुनि जनु देत हठि सारी ॥

छुट पतित तुम तारे ओपति भव न करी जिय गारी ।
 'सूरदास' सौचौ तब मानै जब होय मम निम्नारी ॥

(१५)

प्रभु तुम दोन के दुख-हरन ।
 स्वाम-सुंदर मदन-मोहन बानि समरन-मरन ॥
 दूरि देखि मुदाम भावत थाप दूत पर्यौ धरन ।
 लख्य सौ बहु लखि हीनी बानि भवदर-धरन ॥
 बधे कौरव, भंजि सुरपति, बने गिरिवर-धरन ।
 'सूर' प्रभु को कृपा जापर भक्त-जन सब धरन ॥

(१६)

प्रभु मेरं घोरुन पित न धरौ ।
 ममदरमो प्रभु नाम विहारौ समने वनहि करौ ॥
 एक लोहा पूजा में राखन एक धर बधिक परौ ।
 यह धरन धारम नहि जानन कंचन करन धरौ ॥
 एक नदिया एक नार कहावन मैला नोर भरौ ।
 जब मिलिकै दाउ एक बदन भय मुहमरि नाम धरौ ॥
 एक नाव एक बरु कहावन सम्य्यास भगरी ।
 अथ का धर माण्ड 'य' वनाए नहि वन जाव टरी ॥

१०—इन पदों में मूर की भक्ति का कैसा प्रतिबिम्ब तुम्हें दिखनाई पड़ता है ?

११—राम-भक्ति-संबंधी तुलसीदास के कुछ पद जो तुम्हें बाद में सुनाकर समझाओ ।

संकेत—

१—मूर के काव्य की आलोचनात्मक विवेचना कर समझाना ।

२—मूर और तुलसी की तुलना करना-कराना ।

३—मूर और तुलसी की भक्ति-धारा का भेद दिखाना ।

परिशिष्ट

श्री सारंगदेव जी० एन० आर्ष०—जन्म सं० १८८०, मृ० १९५२

(राजभोज का सपना)

आम काशीवासी थे वहाँ के आम प्रसिद्ध भाग्यिक और प्रसिद्ध हैं। आम शिक्षा विभाग में इंसपेक्टर तथा टेक्निकल कलेजों के प्रधान रह चुके थे। आमको सरकार ने सशस्त्र और सी० ए० आर्ष० की उपाध प्रदान की। आमने ए.टी. का स्तुत्य इतिहास किया और इसे शिक्षा विभाग में स्थान दिलाया। आमने बादशाहाजी के लिये गुरुदा, इतिहासशास्त्रनाटक आदि कई कुरा पुस्तकें लिखीं और संस्मृत कीं। आमने कई नए लक्ष्य पूर्ण भी किये।

आमको भाग्य बहुत ही बलवाने-शुद्ध-मानसिक दिल होता था। आमका विचार था कि भाग्य देसी ही हमारे वरदान होने लगे लोग साधारणतः भाग्य की सम्झने से। स्थिति तथा आदर्शों के लिये ही आदर्शों के आदर्श प्राप्त से ही भाग्य सम्झने से। वे शिक्षा और ज्ञान को निकास कर एक आदर्श बना बसना चाहते थे।

उनका शील बड़ा ही श्रेष्ठ था। उनके दिल में एक बात थी कि जो व्यक्ति सदा ही कुरा करेगा, उसे ही भाग्य मिलेगा। वे मानते थे कि जिस व्यक्ति को ही भाग्य मिलेगा, जो सदा ही कुरा करेगा। वे मानते थे कि जिस व्यक्ति को ही भाग्य मिलेगा, जो सदा ही कुरा करेगा। वे मानते थे कि जिस व्यक्ति को ही भाग्य मिलेगा, जो सदा ही कुरा करेगा।

इसके लिए वे सब संभव उपाय लेंगे। वे हिंदी भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे। हिंदी भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे।

हिंदी भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे।
(संस्कृत भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे।)

संस्कृत भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे। संस्कृत भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे। संस्कृत भाषा के हितों के लिए सब संभव उपाय लेंगे।

आपने कई मुख्य ग्रंथ लिखे जिनमें से मेधवृद्धिनीद ३ भाग हिंदी-भाषित्य का इतिहास), हिंदीनगररत्न, भारतवर्ष का इतिहास ० भाग, गयोन्मोहन (नाटक), पूर्वे भाग (नाटक), भूंदीवारीश (काव्य), नागल और रूस का इतिहास आदि लिखे हैं।

इनकी भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट, और प्रौढ़ होती है। शैली रोचक, भावपूर्ण और गदाबलीपूर्ण है।

पंडित रामचंद्र शुक्ल -- जन्म-संवत् १९४१

(मिडना)।

आपका जन्म आरिबन की पूर्णिमा को बली जिला के अगोना गाँव में हुआ। इन्होंने एक-एक तक कालिज में शिक्षा पाई। बाल्यकाल में मरक़ुब की भी शिक्षा पाई थी। सन् १९०६ में इन्होंने कानून की भी परीक्षा दी थी, पर विफल रहे। इस बीच वे मिडनापुर मिशन स्कूल में मास्ट्र हो गए थे। १९०८ में वे नागरी-प्रचारिणी मभा में एदोशब्दगागर के सहकारी सनादक के रूप में चुलाए गए। आठ नौ वर्ष तक इन्होंने नागरी-प्रचारिणी संस्थान का सनादन किया। आजकल आप काशी-विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं। आप काव्य और गद्य-लेखक दोनों हैं। आपका कवितार्थ अत्यंत भावपूर्ण होती है। कुटुंब कविताओं के अतिरिक्त आपने बुद्धचरित नामक एक महाकाव्य लिखा है। आपने निबंधों में बंध गूढ भाव भरे रहते हैं, इससे वे नाटक और दूरदू होते हैं। इन्होंने अपने निबंधों के लिये या तो साहित्यिक विषय चुने हैं, या मनोविकार धर, दुलियाँ और जायसी का मामक और परस्मृत प्राल बनाए में इन्होंने लिखा है। इनकी समासनामक न गदा के आलाचना चैन में एक नए युग का सुधरत क है।

पं० चंद्रमौलि शुक्ल, एम० ए०, न० टी०—

(जापान की गद्याभ्यासी)

आप कान्पकुञ्जबंदीय शुद्ध हैं। इस समय आप ट्रेनिंग कालेज बनारस में कार्य प्रारम्भ हैं। आप अँगरेज़ी, संस्कृत और हिंदी के विद्वान् हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। हिंदी की सेवा आप बहुत दिनों से कर रहे हैं। आपकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और भावपूर्ण होती है।

रा० व० लज्जाशंकर भा, एम० ए०, एल० टी०—

(जीवन-संग्राम और छोटे प्राणी)

आप अँगरेज़ी और हिंदी के पंडित हैं। इस समय आप काशी-अंशुबिद्यालय के ट्रेनिंग कालेज में मिलिए हैं। आपने कई सुंदर पुस्तकें लिखी हैं उनमें से "शिवर-व्यक्ति" अत्यंत लोकनीय है। आप भी हिंदी-प्रेमी और साहित्यसेवी हैं। आपकी भाषा प्रौढ़ और शुद्ध होती है; और ऐसी सुवाचपूर्ण तथा स्पष्ट रहती है।

पं० कानताप्रसाद शुक्ल—जन्म-सं० १९३२

(सभाषण में शिष्टाचार)

आप जबलपुर-निवासी कान्पकुञ्ज बंधु हैं। आप लड़ी घोषी के कवि और लेखक हैं। आपने हिंदी का एक बड़ा व्याकरण बड़ी योग्यता से लिखा है। आपकी रचनाएँ मरखती आदि मानिक परिषद्‌को से प्रकाशित हुयीं रहती हैं। आपकी भाषा परिमार्जित, परिमार्जित और भावपूर्ण होती है। आपकी शुद्ध, सुंदर-लेखन और भाषा की सेवा करने के लिए आपने बहुत-से सुंदर-लेखन किए हैं।

सूरदास —

(सूर मृगा)

सूरदास का जन्म लगभग १५४० के लगभग मथुरा और
 आगरे के बीच बनारस नाम के नुआँवा या बड़ भी हाल में बना
 जाया है कि वे बड़ बनारस के रहकर थे । इनके पिता का नाम
 इति वद या इनके लु भाई मूलनभागी के साथ गृह में था मर ।
 केवल वही जैय रहे । बाल्य बड़ का । वे बड़े के साथ गृह में
 नहीं था । मरने के । वे बड़ों की वहाँ तक जाकर रहने रहे ।
 एक बार कुँरे में था । इ । इन तक रही रहे । बाल्य
 लगभग के बड़ावक भावना में कुच्छका में इन्हीं वहाँ रह
 छी । कुँरे में बड़ा । नभागा । इस समय इनकी छींटी की लुन
 गा । बरद ल में । मरने का । इन । वे आगरे में था है
 आगरे में था । वहाँ । इन्हीं रहे । मर । आगरे में था । इनके
 में । इ । वे । मर । आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था ।
 मर । आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था । इनके । मर ।
 आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था ।
 इनके । मर । आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था । इनके । मर ।
 आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था । इनके । मर । आगरे में था ।

सूरदास की मृगा —

(सूर मृगा मरने का वृत्त)

सूरदास की मृगा मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त ।
 मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त ।
 मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त ।
 मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त ।
 मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त । मरने का वृत्त ।

देकर इनकी माता मर गई थी। राजा शही ने तीन वर्ष तक इनका पालन किया। साँप काटने में वह भी मर गई। कुलकर्णी समझ कर इनके पिता ने इन्हें त्याग दिया। तब नरहरामजी ने इनकी पालन-पोषण की। इनके सब सरकार किए। इन्हीं में इनका नाम तुलसीदास रखा। इनका पहला नाम रामचंद्रना था। गौरीमनाथजी के पास कारी में इन्होंने किया प्राप्त की। आगे चलकर इनका विवाह भी हुआ। एक रा. वे अत्यंत प्रेम से बारह अपनी स्त्री के पीछे पीछे अपनी स्तुतियाँ ही दीं गये। इस पर इनकी स्त्री ने इन्हें पत्नीपति विरहसे इन्हें बिरह्य हो गया। इन्होंने मारे भारत का भ्रमण किया और गौरीमनाथजी के पास रामचंद्रनाथजी से कई अनुग्रह प्राप्त लिये। इनकी मृत्यु कारी में स. १६८० में हुई।

केशवदास - जन्म-सं० १६१०, मृत्यु-सं० १६७४

(रत्न और अंगद)

ये कनकदासजी के पुत्रों में थे। इनका नाम रत्न और अंगद नरेश भी रामचंद्र के भाई भी इन्द्रजीवित्त के पिता मन्त्र में। महाराज बिरहल ने इनको एक छंद पर प्रसन्न होकर इन्हें ६ लाख रुपए पुरस्कार में दिए। इन्हीं के कहने में इन्होंने गौरीमनाथजी का अनुग्रह भी मुद्राज करा दिया।

राजरा समस्त वंश कस्तूरत श्रीर रत्नदा था, आप भी कस्तूरत के प्रसन्न राहत थे। भाषा में आपका पुत्र अंधकार था, कस्तूरदास प्रेम पत्राल के 'अंध अंधकार' में थे। आपका कस्तूर (कस्तूर) श्रीर उन्हीं है। उस पर कस्तूरत का प्रभाव है। उनमें एक वंशदास, पंचाक्षर स्वरूप में भाषाकथा है। राजरा का वंशदास श्रीर गुरु है। पंचाक्षरी भाषागम, नाम का कुं ६-१० है।